हिन्दू चेतना

(पाक्षिक)

E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5117

हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्।
मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता॥

2072 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
भक्तिविचारः	5
दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग	6
धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में....	7
यह कौन सा धर्म है?	8
युग युगीन नव हिन्दू-संहिता शीघ्र सृजन हो	9
सर्व जन हिताय यज्ञ सम्पन्न	11
हिन्दू-संस्कृति की विशेषतायें	12
अखण्ड भारत संकल्प दिवस	14
सभ्यताओं का टकराव	15
रक्षाबंधनः इतिहास के झरोखे से आज तक	16
भारत का अखण्ड स्वरूप	18
यूपी में सच्चर की सिफारिशों पर....	20
छड़ी मुबारक प्रार्थना के साथ अमरनाथ यात्रा	20
राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की पत्नी का निधन	21
पर्यावरण रक्षनार्थ वृक्षारापेण कार्यक्रम....	22
बैंकॉक के ब्रह्मा के मन्दिर पर आतंकी हमलों...	23
हिन्दुस्थान अखण्ड होकर ही रहेगा	24
वि.हि.प., बजरंग दल ने किया	25
बूढ़ा अमरनाथ यात्रा 2015 का शुभारंभ	26
खिचड़ीपुर काँवड़ शिविर में काँवड़ियों....	26

हिन्दू चेतना परिवार की ओर से सभी सुधी पाठकों एवं विज्ञापनदाताओं को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व विश्व हिन्दू परिषद स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

अथानवमोऽध्यायः

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥६॥

तुम ऐसा मान लो कि जिस प्रकार से महान वायु जो यद्यपि सर्वत्र विचरण करती रहती है फिर भी नित्य आकाश में ही स्थित रहती है, उसी प्रकार से सम्पूर्ण प्राणी मुझमें ही स्थित रहते हैं।

आकाश के सदा अंतर्गत-रहती वायु महान उपस्थित हो उत्पन्न वायु नभ से ही-अरु होती विलीन नभ में ही यथा वायु सर्वत्र विचरति-और प्रत्येक दिशा में चलती सब प्राणी भी इसी भाँति से-प्रकटित होते हैं ये मुझसे स्थित रहते हैं मुझमें ही-अरु विलीन होते मुझ में ही चौदह भुवन तीन लोकों में-भ्रमित अनेक योनि चक्रों में स्वतंत्र सत्ता किसी की नहीं-मुझ बिनु रह सकता न कोउ कहीं अतएव सब स्थित मुझमें ही-इसे मान तू दृढ़ मन से ही

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ॥५॥

हे कौन्तेय! कल्पों के अन्त में समस्त प्राणी मेरी प्रकृति में लीन हो जाते हैं और कल्पों के आदि में मैं पुनः उनकी रचना करता हूँ।

दोहा-ब्रह्मा जी की आयु जब, हो जाती है पूर्ण।
महाप्रलय के काल में, तो प्राणी सम्पूर्ण।।
निज निज कर्मों के सहित, परवश प्रकृति अधीन।
तब वे मेरी प्रकृति में, हो जाते हैं लीन।।

पुनि आरम्भ कल्प जब होते-पुनः प्रकट ब्रह्म जी होते लीन हुये परवश जीवों को-हे अर्जुन उनके कर्मों को पुनः शुद्ध होने का अवसर-अरु परिपक्व कर्म फल देकर विविध योनि के तनु देता हूँ-यूँ उनकी रचना करता हूँ

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्
दिल्ली-110035, दूर : 011-27192504

भाद्रपद कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् २०७२
३० अगस्त से १३ सितम्बर २०१५ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — शरद ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
रविवार	प्रतिपदा	शतभिषा	१४	30	
सोमवार	द्वितीया	पूर्वाभाद्रपद	१५	31	कज्जली तीज
मंगलवार	तृतीया	उत्त. भाद्रपद/रेवती	१६	1 सितम्बर	पंचक समाप्त, बहुला चतुर्थी
बुधवार	चतुर्थी	अश्विनी	१७	2	
गुरुवार	पञ्चमी	भरणी	१८	3	चन्दन षष्ठी व्रत
गुरुवार	षष्ठी	00	००	00	क्षय
शुक्रवार	सप्तमी	कृतिका	१६	4	शीतला सप्तमी
शनिवार	अष्टमी	रोहिणी	२०	5	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत
रविवार	नवमी	मृगशिरा	२१	6	गुग्गा नवमी
सोमवार	दशमी	आर्द्रा	२२	7	गुरू उदय
मंगलवार	एकादशी	पुनर्वसु	२३	8	अजा एकादशी व्रत
बुधवार	द्वादशी	पुष्य	२४	9	वत्स द्वादशी
गुरुवार	त्रयोदशी	श्लेषा	२५	10	प्रदोष व्रत, गुरु बाल्यत्व समाप्त
शुक्रवार	त्रयोदशी	श्लेषा	२६	11	मास शिवरात्रि व्रत
शनिवार	चतुर्दशी	मघा	२७	12	पिठौरी अमावस्या पितृ कार्येषु
रविवार	अमावस्या	पूर्वा फाल्गुनी	२८	13	कुशोत्पाटनी अमावस्या (ऊँहूँफट्स्वाहा) कुंभ स्नान

श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र उवाच)

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्ते भूतग्रामे चतुर्विधे ।
विज्ञस्यैव हि सामर्थ्यमिच्छाऽनिच्छा विवर्जने ॥५॥

''ब्रह्मा से लेकर चींटी तक चार प्रकार के जीवों में केवल ज्ञानी ही ऐसा है जो इच्छा और अनिच्छा को रोकने में समर्थ है।''

आत्मानमद्वयं कश्चिज्जानाति जगदीश्वरम् ।
यद्वेति तत्स कुरुते न भयं तस्य कुत्रचित् ॥६॥

"कोई कोई विरला ही आत्मा तथा परमात्मा को अद्वय (अर्थात् दोनों की एकता को) जानता है। वह जिस कर्म को करने योग्य मानता है, उसे करता है; उसको किसी का कोई भय नहीं।"

भक्तिविचारः

षोडशोऽध्यायः

अथ भक्तिं समुद्दिश्य पृष्टः पुरुषसत्तमः।
अभाषत महाभागो भगवान् रमणो मुनिः॥१॥

भावार्थ - तब पुरुषोत्तम महाभाग भगवान् रमण मुनि ने भक्ति के विषय में पूछे जाने पर कहा।

आत्मा प्रियः समस्तस्य प्रियं नेतरदात्मनः।
अच्छिन्ना तैलधारावत् प्रीतिर्भक्तिरुदाहृता॥२॥

भावार्थ - आत्मा सबको प्रिय है। आत्मा की अपेक्षा कोई प्रियतर नहीं है। तैलधारा के समान अच्छिन्न प्रीति ही भक्ति कही गयी है।

अभिन्नं स्वात्मनः प्रीत्या विजानातीश्वरं कविः।
जानन्नप्यपरो भिन्नं लीन आत्मनि तिष्ठति॥३॥

भावार्थ - प्रेम द्वारा आत्मवेत्ता ईश्वर को आत्मा से अभिन्न जानता है। दूसरा (भक्त) भिन्नता को जानता हुआ भी आत्मा में लीन रहता है।

वहन्ती तैलधारावद् या प्रीतिः परमेश्वरे।
अनिच्छतोऽपि सा बुद्धिं स्वरूपं नयति ध्रुवम्॥४॥

भावार्थ - जो प्रीति तैलधारा के समान परमेश्वर में बहती है, वह इच्छा न करने वाले पुरुष की भी बुद्धि को अवश्य ही स्वरूप की ओर ले जाती है।

परिच्छिन्नं यदाऽऽत्मानं स्वल्पज्ञं चापि मन्यते।
भक्तो विषयिरूपेण तदा क्लेशनिवृत्तये॥५॥
व्यापकं परमं वस्तु भजते देवताधिया।
भजँश्च देवता-बुद्धया तदेवान्ते समश्नुते॥६॥

भावार्थ - जब भक्त आत्मा को विषयि रूप से सीमित तथा अल्पज्ञ मानता है, तब (वह) क्लेश की निवृत्ति के लिए व्यापक परम वस्तु (परमात्मा) को देवता बुद्धि से भजता हुआ उसी ईश्वर को अन्त में प्राप्त होता है।

देवताया नरश्रेष्ठ नामरूप-प्रकल्पनात्।
ताभ्यां तु नामरूपाभ्यां नामरूपे विजेष्यते॥७॥

भावार्थ - हे नरश्रेष्ठ! ईश्वर के नाम और रूप की कल्पना करके भक्त उन नाम और रूप से नाम रूप को जीत लेता है। (अर्थात् नाम रूप से अतीत वस्तु को प्राप्त करता है)।

भक्तौ तु परिपूर्णायामलं श्रवणमेकदा।
ज्ञानाय परिपूर्णाय तदा भक्तिः प्रकल्पते॥८॥

भावार्थ - भक्ति के पूरिपूर्ण होने पर एक बार का श्रवण ही काफी है। तब भक्ति परिपूर्ण ज्ञान-प्रदान करने में समर्थ होती है।

धाराव्यपेता या भक्तिः सा विच्छिन्नेति कीर्त्यते।
भक्तेः परस्याः सा हेतुर्भवतीति विनिर्णयः॥९॥

भावार्थ - जो भक्ति धाराव्यपेत है अर्थात् बीच में टूट जाती है, वह विच्छिन्न भक्ति कही जाती है। (तथापि) वह पराभक्ति का कारण होती है। यह निश्चित सिद्धान्त है।

कामाय भक्तिं कुर्वाणः कामं प्राप्याप्यनिर्वृतः।
शाश्वताय सुखायान्ते भजते पुनरीश्वरम्॥१०॥

भावार्थ - पुरुष किसी कामितार्थ के लाभ के लिए भक्ति को करता हुआ, उस लाभ को पाने पर भी निवृत्त नहीं होता। अन्त में नित्य सुख के लिए वह पुनः ईश्वर को भजता है।

भक्तिः कामसमेताऽपि कामाप्तौ न निवर्तते।
श्रद्धा वृद्धा परे पुंसि भूय एवाभिवर्धते॥११॥

भावार्थ - भक्ति सकाम होने पर भी इच्छा पूर्ति होने पर समाप्त नहीं होती, किन्तु पुरुषोत्तम में श्रद्धा बढ़ने पर फिर भी बढ़ती जाती है।

वर्धमाना च सा भक्तिः काले पूर्णा भविष्यति।
पूर्णया परया भक्त्या ज्ञानेनेव भवं तरेत्॥१२॥

भावार्थ - वृद्धि को प्राप्त हुई वह भक्ति समय पर पूर्ण हो जाती है। पूर्ण और परम भक्ति से भक्त संसार को उसी प्रकार तर जाता है, जिस प्रकार ज्ञानी ज्ञान के। ❑

नासिक महाकुम्भ पर्व शाही स्नान

प्रथम शाही स्नान-श्रावण शुक्ल पूर्णिमा शनिवार वि.सं. २०७२ दि. २९ अगस्त २०१५
द्वितीय शाही स्नान-भाद्रपद कृष्ण अमावस्या रविवार वि.सं. २०७२ दि. १३ सितम्बर २०१५
तृतीय शाही स्नान-भाद्रपद शुक्ल ५ (ऋषि पञ्चमी) शुक्रवार वि.सं. २०७२ दि. १८ सितम्बर २०१५

दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

दुर्गावाहिनी हिमाचल प्रदेश का प्रदेश स्तरीय शौर्य प्रशिक्षण शिविर (वर्ग) का आयोजन 24 जुलाई से 1 अगस्त, 2015 तक रामेश्वरी टीचर्स ट्रेनिग कॉलेज शाढ़ाबाई (भून्तर) में किया गया। इस प्रशिक्षण वर्ग में अपने प्रदेश के 24 संगठनात्मक जिलों से 17 जिलों का प्रतिनिधित्व रहा। जिसमें 32 स्थानों से 68 बहनों ने इस वर्ग में भाग लिया, इसके अलावा मारण्डा (पालमपुर) छात्रवास की 11 बच्चियों ने भी वर्ग में भाग लिया। वर्ग में आठ शिक्षिकांए तथा चार बहने प्रबन्धक के नाते वर्ग में उपस्थित रही। वर्ग में वहनों को केन्द्रीय तथा प्रांतीय अधिकारियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

वर्ग का उद्घाटन केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के पूज्य संत महामण्डलेश्वर रामशरण दास जी महाराज तथा विश्व हिन्दू परिषद् के प्रांत मंत्री देव कुमार ने किया। इस अवसर पर दुर्गावाहिनी की उत्तर भारत संयोजिका सुश्री रजनी ठुकराल, प्रांत विहिप सह-मंत्री सुश्री मॉचली ठाकुर, प्रदेश संयोजिका दुर्गावाहिनी सुश्री भावना ठाकुर, प्रदेश सह संयोजिका सुजाता शर्मा भी उपस्थित रहीं।

वर्ग के सातों दिन बहनों को अपनी सनातन आचार पद्धति, विश्व हिन्दू परिषद् का इतिहास, दुर्गावाहिनी, इस्लाम, ईसाईयत, आतंकवाद, लव जेहाद, हमारी बीरांगनाओं, राष्ट्र निर्माण में सतों का योगदान, हिन्दू घर, गर्भ संहिता, परिवार प्रबोधन इत्यादि विषयों पर विभिन्न पदाधिकारियों द्वारा मार्गदर्शन किया गया, तथा साथ-साथ युवतियों को शारीरिक रूप से सक्षम बनाने हेतु नियुद्ध (जूडो-कराटे), दंड (लाठी अभ्यास), रायफल, तलवार, योगासन, समता का प्रशिक्षण दिया गया। जिनमें मुख्यता सुश्री रजनी ठुकराल (क्षेत्र संयोजिका दुर्गावाहिनी) श्रीमती मालती शर्मा (क्षेत्र संयोजिका मातृशक्ति) श्रीमती विमला अगिरस (प्रांत संयोजिका मातृशक्ति) सुश्री मॉचली ठाकुर (प्रदेश सह-मंत्री विहिप) सुश्री भावना ठाकुर (प्रदेश संयोजिका दुर्गावाहिनी) श्रीमती मिनाक्षी ताई (केन्द्रीय सह मंत्री एवं अखिल भारतीय सयोंजिका मातृशक्ति) श्रीमती मीना ताई भट्ट (केन्द्रीय उपाध्यक्ष विहिप) डॉ. स्मृति, श्रीमति अम्बिका सूद (पूर्व अध्यक्षा महिला आयोग) तथा विश्व

हिन्दू परिषद् के क्षेत्रिय संगठन मंत्री श्री करूणा प्रकाश जी विहिप के प्रदेश अध्यक्ष अमन पुरी तथा विहिप के प्रदेश संगठन मंत्री श्री मनोज कुमार का मार्गदर्शन भी वर्ग में उपस्थित बहनों का प्राप्त हुआ।

वर्ग के समापन अवसर पर दुर्गावाहिनी की उत्तर भारत संयोजिका सुश्री रजनी ठुकराल ने कहा की वर्तमान समय में देश में पारिवारिक मूल्यों का पतन हो रहा है। लोग अपने धर्म, संस्कृति, परम्पराओं को छोड़ रहे हैं। महिलाओं पर अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं, महिलाऐं अपने को कहीं भी सुरक्षित महसूस नही कर रही हैं। अपने प्रदेश में भी धर्मान्तरण, लव जेहाद की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं। इन सब कुरीतियों से लड़ने के लिए तथा धर्मान्तरण व लव जेहाद जैसी घटनाओं से निपटने के लिए दुर्गावाहिनी समय-समय पर महिलाओं (युवतियों) की आत्मरक्षा हेतु व देश धर्म के प्रति उनकी जागरूकता बनाए रखने के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करती है, जिसमें महिलाओं (युवतियों) को देश के समक्ष वर्तमान चुनौंतियां, विवेकानंद जी के स्त्रीपरक विचार, दुर्गावाहिनी, विहिप की स्थापना व उपलब्धि, श्रीराम जन्मभूमि, राष्ट्र के समक्ष वर्तमान समस्याएं, किशोरावस्था, आदर्श हिन्दू घर, लव जेहाद, आतंकवाद इत्यादि विषयों के बारे में वैचारिक प्रबोधन किया जाता है, इसके साथ-साथ युवतियों को शारीरिक रूप से सक्षम बनाने हेतु नियुद्ध (जूडो-कराटे), दंड (लाठी अभ्यास), रायफल, तलवार, योगासन का प्रशिक्षण दिया जाता है। सुश्री रजनी ठुकराल ने कहा कि आज लव जिहाद की घटनायें अपने प्रांत में भी दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। दुर्गावाहिनी माता

सीता का आदर्श महिला स्वरूप है, दुष्टों के विनाश के लिए दुर्गा ने काली का रूप धारण किया है। आज देश के अन्दर दुर्गावाहिनी की प्रचंड शक्ति देश विरोधी ताकतों से लड़ रही है। लव जेहाद आज रावण के भेष में अबला का शोषण करता हुआ दिखाई दे रहा है, अत: हमे अबला नहीं सबला वनना है। हमने पिछले लम्बे समय से लव जिहादियों के खिलाफ एक आदोंलन चलाया है, जिसके लिए ऐसे प्रशिक्षण वर्गो के माध्यम से वहनों को जागरूक किया जा रहा है। उन्होंनें युवतियों से आवाहन किया कि हम यंहा से संकल्प लेकर जांए कि किसी भी मुस्लमान से आर्थिक व्यवहार नही करेगें, दोस्ती नही निभाएंगें तथा सजग रह कर अपने आस-पास हो रही घटनाओं का विरोध करेगे और लोगों को जागरूक करेगें।

प्रेषक : **रजनी ठुकराल**

उत्तर भारत, क्षेत्र सयोंजिका, दुर्गावाहिनी

धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रशासन का हस्तक्षेप दु:खद और भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला

-डॉ. प्रवीणभाई जी तोगड़िया, अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष विहिप

दिल्ली, 20 अगस्त, 2015। सन्माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय के संथारा पर प्रतिबन्ध लगाने के निर्णय पर दु:ख और आक्रोश व्यक्त करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने कहा, "भारत में प्राचीन समय से समृद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ, गतिविधियाँ, धर्म स्थान, और श्रद्धाएँ हैं। युगों से उन्हें भारत के करोड़ों सनातनी, जैन, बौद्ध, सिख आदि अपने जीवन में संजोएँ हुए हैं। इन सभी समाजों को जब जब ऐसा लगा कि कुछ गतिविधियों, परम्पराओं में समाज के हित में कुछ परिवर्तन करना चाहिए, तब तब धार्मिक आचार्य, समाज की विद्वानगण और अन्य लोगों ने मिलकर कई परिवर्तन स्वयं ही किये हैं, जैसे कि कन्या शिक्षा, विधवा विवाह आदि।"

डॉ. तोगड़िया ने आगे कहा- ''परन्तु आजकल पाश्चात्य विचारों से प्रभावित होकर, जो जो भारतीय सनातनी, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि हैं उन के प्रति घृणा दिखाना और उन्हें अपमानित करना यह एक फैशन हो गया है। ऐसे पाश्चिमात्य विचारों से पूर्वाग्रह दूषित होकर कोई भी प्रशासनिक प्रणाली भारत के धर्म/संस्कृति /कला, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ, धर्मस्थान आदि में इन धर्म/परंपराओं/संस्कृति/श्रद्धाओं को माननेवालें और उन का पालन करने वाले इन की भावनाओं को आहत ना करें। भारत की प्राशासनिक प्रणालियों- सरकारें /न्यायपालिका आदि- का सम्मान करते हुए हम उन्हें विनम्र विनती करते हैं कि भारत की धार्मिक/सांस्कृतिक परम्पराएँ और गतिविधियाँ, श्रद्धाएँ, धर्मस्थान आदि के निर्णय भारत के धार्मिक - सामाजिक आचार्यों पर, उन परंपराओं/श्रद्धाओं का पालन करनेवाले करोड़ों लोगों पर और उनमें से आएं विद्वानों/ उन समाजों के प्रतिनिधियों पर ही छोड़े जाएँ और इन में से किसी में कोई भी प्राशासनिक प्रणाली हस्तक्षेप ना करें। पाश्चात्य सभ्यता या वामपंथी विचारों से धार्मिक, सांस्कृतिक बातों में किये गए प्राशासनिक हस्तक्षेप से भारत के करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाएँ आहत होती हैं।" ❑

यह कौन सा धर्म है?

हम अखबारों में, टी.वी.चैनलों पर सुनते हैं कि आतंकवादी मस्जिद में छिप गए हैं। आतंकवादियों ने बम से मस्जिद उड़ाई, आतंकवादियों ने बच्चों को किया अगवा। कई मुस्लिम राष्ट्रों में तो बुरका न पहनने पर महिलाओं के नाक काटे जाते हैं। महिलाओं को कोड़े मारे जाते हैं। उनको विद्रुप किया जाता है। इतना ही नहीं रमजान को पवित्र मानने वाले लोग रमजान में दंगा करते हैं। बम लगाकर मस्जिद उड़ाना तो आतंकवादियों की आदत हो गई है। फिर भी हिन्दुस्तान के तथाकथित सेक्यूलर लोग आतंकवादियों की पीठ थपथपाकर खुद को धन्य महसूस करते हैं।

खुद को सेक्यूलर कहने वाले लोग मुझ बतायें कि यह कौन सा धर्म है। जो रमजान को पवित्र मान कर भी रमजान में भी आतंकी हमलें करने के लिए कहता है। यह कौन सा धर्म है जो धर्म के नाम पर बच्चों को अगवा करने के लिए कहता है। यह कौन सा धर्म हो जो बुरका न पहनने पर महिलाओं की नाम काटने तथ विद्रुप करने के लिए कहता है। यह कौन सा धर्म है जिसमें आतंकवादी हथियार लेकर मस्जिद में छिप जाते हैं। यह कौन सा धर्म है जिसमें अंग्रेजी पढ़ने वाले बच्चों को गोलियों से भून दिया जाता है। क्या यही आतंकवादियों का धर्म है? जो धर्म के नाम पर अधर्म करने के लिए कहता है शायद इन तथाकथित सेक्यूलरों को इन सवालों को जवाब नहीं पता होगा। फिर भी आतंकवादियों पर स्तुति सुमन उड़ाये जाते हैं। परन्तु दया, शील, करूणा से भरे, ममता से भरे हिन्दू ने अगर कहा कि मैं हिन्दू हूँ तो मानो उन्होंने बड़ा पाप किया। बहुत से मीडिया वाले तो दिन भर रट लगाये रहते हैं, उनको लगता है हिन्दू होना पाप है। पर एक मुस्लिम या ईसाईयों को सब छूट है।

एक हिन्दू का धर्मान्तरण हो गया तो मीडिया वाले चूँ तक नहीं करेंगे। अगर यही घर वापसी का मुद्दा हो तो दिन भर कोसते रहेंगे इतना ही नहीं दिन भर कम से कम हजारों बार आर.एस.एस. और वि.हि.प. का नाम दोहरायेंगे। इसके बाद सेक्यूलरों की टोली शाम को डीवेट के लिए बैठेगी। हर एक अपनी अपनी तरह से आर.एस.एस. को कोसेगा। बीच में ही इन सबको मोदी याद आयेंगे और टी. वी. पर हेड लाइन शुरू होगी। "जवाब दें प्रधानमंत्री मोदी" इसके बाद कांग्रेस वाले और बहुत से हीरो कहेंगे माफी मांगे मोदी। फिर एक स्थायी डिवेट का वाक्य दोहराया जायेगा "घर वापसी में आर.एस.एस. का हाथ होने की आशंका" पर हिन्दूओं का धर्मान्तरण हो रहा है यह कोई नहीं बतायेगा। देश में या दुनियां में जो सबसे बड़ा और मुख्य सवाल है जो कि धर्म के नाम पर आतंकवाद को बढावा दे रहें है हिन्दू का धर्मान्तरण हो रहा है।

ये तथाकथित सेक्यूलरों को दिखायी नहीं देता। तो मन में प्रश्न उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि यह कौन सा धर्म है जो धर्म के नाम पर अधर्म करने के लिए कहता है।

प्रेषक : **आकाश जोशी**
कारसेवकपुरम् अयोध्या
8689874051

वार्ता रद्द करे भारतः विहिप

नई दिल्ली : विश्व हिन्दू परिषद ने पाकिस्तान के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) स्तर की वार्ता रद्द करने का सुझाव देते हुए आज कहा कि 'युद्ध जैसे' हालात में बातचीत नहीं हो सकती। विहिप ने कारगिल जैसे हालात दोहराये जाने की चेतावनी भी दी। विहिप ने सरकार से कहा कि वह पाकिस्तान को लेकर अपनी नीति की समीक्षा करें और इसमें बदलाव करे ताकि पड़ोसी देश से निपटने के लिए इसे मजबूत किया जा सके। हिन्दू संगठन ने कहा कि सरकार को एनएसए स्तर की वार्ता रद्द करनी चाहिए। मौजूदा हालात बातचीत के लिए अनुकूल नही है। बातचीत और युद्ध एक साथ नहीं हो सकते। आज युद्ध जैसे हालात हैं और उन्हीं हालात के अनुसार हमें निपटना चाहिए। विहिप के संयुक्त महामंत्री सुरेन्द्र जैन ने कहा कि पाकिस्तान को पहले सबक सिखायें और फिर बातचीत करें। इससे अच्छे परिणाम निकलेंगे अन्यथा हमें आशंका है कि कारगिल जैसे हालात फिर हो सकते हैं। ❑

युग युगीन नव हिन्दू-संहिता शीघ्र सृजन हो

-धर्मनारायण शर्मा, विश्व हिन्दू परिषद

विश्व मावव का आदिस्थान भारत है और सभ्यता-संस्कृति का प्रथम उद्‌गाता भी भारत है। इसके साथ ही मानवी सभ्यता हेतु आचार संहिता निर्माण करने वाला भी भारत ही है। जब विश्व का मानव जंगली मानव था। वह जंगली पशुओं के समान हिंसक था। इस मानव को कच्चे-पक्के का ज्ञान नहीं था, यहाँ तक कि मैं पशुनहीं मानव हूँ इस विभेद की दृष्टि उसके पास नहीं थी। वह नंगा जीवन जी रहा था। भोग भी उसका पशुवत ही था। उस समय भारत के तत्वदर्शी राजपुरुष मनु ने एक श्रेष्ठ, सभ्य, सुसंस्कृत मानव निर्माण की चाह रखकर एक मानवी आचार संहिता का निर्माण किया। क्रमशः परन्तु प्रयत्नपूर्वक, लम्बें प्रयत्नों द्वारा मानव को आचरण के सोपानों पर चढ़ाकर सभ्यता का बाना धारण करवाया। इस जंगली जैसे जीव को अपनी पहचान मिली कि मैं मानव हूँ।

कालक्रम से इस मानव में सभ्यता का संचार हुआ और वह क्रमशः मानवी नियमानुसार आचरण करने लगा। सभ्यता के सोपान चढ़ते-चढ़ते वह पृथ्वी पर भ्रमणशील बना। आरम्भ में जंगली जीव, जंगली फल व कन्द खाकर जीवन जीता रहा परन्तु सभ्यता के एक-एक कदम बढ़ते हुए उसके ज्ञान के कपाट खुलते गये। टोले बने व पुरुष-स्त्री के सम्बन्धों की निकटता द्वारा सन्तानोत्पति हुई इससे एक समूह बना जिससे आपस का प्रेम बढ़ा इस कारण रक्षा-सुरक्षा करते हुए घुमक्कड़ी के साथ बसना आरम्भ किया। कृषि करना लम्बेंकाल में उसने जाना इसके कारण भूमि के प्रति लगाव में से मेरा-तेरा का भाव जागृत हुआ। इस भूमि के भाव से ही राज्य-राष्ट्र का भाव पनपा। सभ्यता के परिणाम स्वरूप चिन्तन की धारा फूटी और यह मानव विशिष्ट आचरणों को धारण करते हुए करणीय अकरणीय के ज्ञान से युक्त बनकर श्रेष्ठाचरण तक पहुँचते हुए संस्कृति का जन्मदाता बना, अर्थात् संस्कृति युक्त मानव का प्रादुर्भाव हुआ।

इस मानव का विकास सभ्यता, संस्कृति युक्त बनाने में मनुमहाराजा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। मनु का एक काल विशेष था। उन्होंने उसकाल के लिये जो मानवस्मृति निर्माण की इसमें शंका नहीं है। अनेक विद्वानों का मत है कि आज जो मनुस्मृति प्राप्त होती है उसमें कई क्षेपक हैं। समय के परिवर्तन और अपनी संकुचितविद्वता वाले विद्वानों ने मनु के नाम से अपने द्वारा बनाये गये श्लोकों को जोड़-जोड़कर मनु के बहुत कुछ भाग को कालबाह्य बना दिया। यदि मनु ने वेदों को अधिष्ठान माना था तो उसमें अनेक श्लोक वेद के भावों से विपरित कैसे आये। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि उन संकुचित व भेद वृत्ति वाले विद्‌वानों ने मनुस्मृति को काफी कुछ क्षेपकयुक्त बना दिया है। वैदिक भावों को समझने वाला शुद्धि को प्रमुखता देता है परन्तु अशुद्ध के शुद्धता प्राप्त करने पर उसे शुद्ध मानकर व्यवहार करता है। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसे अहंकारी विद्वान जिन्हें अपनी श्रेष्ठता, उत्तकृष्टता स्थापित करनी थी, उन्हें लगा कि अपनी श्रेष्ठता तभी स्थापित होगी जब हम किसी को निकृष्ट बनायेंगे। ऐसे अहंकारी विद्‌वानों ने वेद विरूद्ध श्लोक बनाकर मनुस्मृति को मलिन किया है।

यह सच है कि मनु ने ही मानव की सभ्यक जीवनचर्या के लिये पहली आचार संहिता का निर्माण किया और मानव को संस्कृत मानव बनाने का एक उत्कृष्ट प्रयास किया। जैसा ऊपर लिखा है कि कालपरिवर्तनशील है। परिवर्तन के साथ परिवर्तित आचारों का उदय होता है। इस कारण काल परिस्थिति व मौसम, वातावरण तथा राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संचारों के कारण भी कुछ आचार-विचारों में परिवर्तन आता है या परिवर्तन की मांग खड़ी होती है। भारत इस दृष्टि से भाग्यशाली है कि

समय-समय पर विशिष्ट प्रतिभाएँ जन्म लेती रही, जिन्होने धर्म के मूलप्रकाश को ध्यान मे रखकर नवींन स्मृतियों द्वारा देश को काल सापेक्ष बनाया। इस क्रम में याग्यवल्क ऋषि, पारासर, वशिष्ट, गोतम, कात्यायन, यम, नारद, आदि अनेक ऋषियों ने स्मृतियों का निर्माण कर भारतीय जन को उत्कृष्ठ बनाये रखा।

इन स्मृतियों में कुछ विषय तो युगानुकूल है ही परन्तु अनेक विषय मनुष्यों की आज और कल की मांग के अनुसार नहीं हैं। अनेकों स्मृतियाँ बनी है फिर भी भारत यथास्थिति में ही कदमताल करता रहा। तर्कहीन विषय परम्परा के कारण चलते रहे। स्मृतियों के व्याख्याकारों ने भी भारत को अद्यावत् बनाने का अर्थबोध नहीं कराया। इस कारण हिन्दू समाज रूढ़ीवादी, लकीरपूजक बना रहा। भारत पर आक्रमण आये हिन्दू जीवनरक्षा के लिये मुस्लिम बना और विधर्मी बन गया। देवलऋषि ने सिन्ध में इस्लामीकरण से घरवापसी हेतु 'देवलस्मृति' बनाकर परावर्तन के द्वार तो खोले परन्तु प्रायश्चित की पद्धति सरल नहीं बनाई।

इस कारण सबके सब मुस्लिम बने पुनः हिन्दू नहीं बन सके। इसका मूल कारण पण्डित व कट्टरवादी साम्प्रदायिक कार्यकृति रही है। आज भी हिन्दूसमाज पर मनु के क्षेपक नियमों का काफी प्रभाव है इसीलिए तथाकथित शूद्र को चाण्डाल मानकर घृणा करने का व्यवहार आरम्भ हुआ। चाण्डाल तो वह कहलाता है जो बार-बार अपराध व घिनोना व्यवहार करता हो। परन्तु हमारे स्मृतिकारों ने विराटपुरूष से उत्पन्न शूद्र को अछूत कहते हुए शूद्र को ही चाण्डाल बना दिया। क्या विराट पुरूष का कोई अंग अपवित्र माना जा सकता है? सन्तों ने तो प्रभु के चरणों की बड़ी बन्दना की है ऐसे प्रभु के चरणों से उत्पन्न शूद्र को चाण्डाल जिन्होंने कहा है उन्हें कैसे विद्वान माना जाय? डाक्टर ऑपरेशन थियेटर से निकल कर आता है तो पहले अपने को स्वच्छ करता ही है फिर अन्य रोगियों को देखता है। हमने स्वच्छता और शुद्धि को समझे बिना शुद्रों को अशुद्ध मानकर अछुत बना दिया। स्वच्छ होने के पश्चात भी वह मानव ही है और उस विराटपुरूष के चरणों से उत्पन्न चारों वर्णों के अनुसार एक श्रेष्ठ वर्ण है। इस श्रेष्ठता को सिद्ध करना कठीन नहीं है क्योंकि हर व्यक्ति वह शासक हो, ब्राह्मण, क्षेत्रीय, वैश्य हो, साधू-महात्मा ही क्यों न हो सभी के मस्तक भगवान् के चरणों में झुकते हैं और पुजारी से भगवान के चरणों की धोवन को तीर्थ और चरणामृत मानकर श्रद्धापूर्वक उसका पान करते हैं। इस श्रेष्ठ व्यवहार वाले हिन्दू को आचार्य कहलाने वाले ज्ञानियों ने अशुद्ध ही नहीं अछूत मानकर शूद्रों के प्रति दुराव निर्माण का घोर पाप किया है। इस पाप के कारण आज भारत में ईसाइयों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। फिर भी उच्च कहे जाने वाले विद्वान तथा ज्ञानी समझने वाले बड़े-बड़े भवनों में भौतिक सुखों का भोगकर रहे हैं। ऐसे उदासीन व यथास्थितिवादी की कहीं संख्या बढ़ी तो कुछ ही वर्षों में भारत का नाम न जाने क्या बन जायेगा? इस प्रकार के खतरे हमारी गलत व्याख्याओं व अशास्त्रीय प्रवचनों के कारण निर्माण हुए हैं। वेद भगवान एकात्मता का उपदेश कर रहें हैं। परन्तु वेदों की मान्यता वाले कुछ संत व आचार्यो में से वेद विरूद्ध तर्कों द्वारा समाज को विभाजित करने वाली चर्चा व कथाएँ कह रहे हैं। सबके संत बनने की थोथी चाह में से देश-काल व हिन्दूसमाज को सजग करने का कार्य नगण्य ही हो रहा है। बस धन चाहिए, हमारी झोली भरो, हमें गुरू बनाओं और हमारी पादवन्दना करो यही कथाकारों व प्रवचनकारों का अभिप्राय बन गया है।

कब तक यह पोगापंथ चलाओगे? आज तो समय की मांग है, हिन्दू समाज को एकात्म बनाने की है। इस समाज को आज के परिपेक्ष में नई आचार संहिता देने की। कलिकाल में विज्ञान प्रबल हो रहा है। भौतिकता छलांगे मार रही है। जीवन जीने के प्रकार बदल रहे है। संस्कारों की परिपाटीरूद्ध सी हो गयी है। व्यक्तिवाद, सरकारवाद बढ़ता जा रहा है। धन-सम्पदा में अथाह वृद्धि होने के कारण विकारों का प्राबल्य निर्माण हुआ है ऐसी परिस्थिति में हिन्दू के लिये युगानुकूल स्मृति नहीं आई तो हिन्दू के साथ हिन्दुत्व के अस्तित्व पर भी प्रश्न वाचक चिह्न खड़ा हो जायेगा। हिन्दूसमाज की नई पीढ़ी पश्चिमी रंग में रंग रही है। स्वभाषा, स्वसंस्कृति का परिचय घट

रहा है इस कारण राष्ट्रीय स्वाभिमान में भी कमी निर्माण होती जारही है। स्व को स्वीकार ने की मनोवृत्ति पैदा की जा सकती है परन्तु परिवार भाव तथा पारिवारिक परम्पराओं से दूर होने के कारण अपने तीज-त्योहारों, उत्सवों, गीतों व ग्रंथों से एक प्रकार से उसका ध्यान हटता जा रहा है। माता-पिता बालकों को अंग्रेजी विद्यालयों में विशेषकर ईसाई संस्थाओं द्वारा चलाये गये विद्यालयों में पढ़ाने के कारण लड़कियों के मंगल चिह्न गायब हो रहे हैं और लड़कों-लड़कियों को भारतीय अवतारों के स्थान पर एक भेड़ चराने वाले अपढ़ तथा कुमारी कन्या से पैदा हुए विदेशी-विधर्मी की काल्पनिक कथाओं द्वारा उसकी श्रेष्ठता का परिचय कराकर प्रभावित किया जा रहा है।

इसलिये हिन्दूसमाज को अपनी श्रेष्ठ, मूल्याधिष्ठित तथा मानबिन्दुओं का ज्ञान करवाने वाली संहिता की आवश्यकता है। इस देश में कालक्रम से अनेक पंथों एवं पूजापद्धतियों का निर्माण हुआ है। इस कारण से भी सबको जोड़कर रखने वाली, सबको ग्राह्य ऐसी आचार संहिता की मांग वर्तमान कर रहा है। यदि समय रहते ऐसी नई आचार संहिता समाज को देंगे तो हिन्दू समाज को नई संजिवनी प्राप्त होगी। वह और कुछ सैकड़ों वर्षों तक युग को आगे ले जा सकेगा तथा उसका आचार-विचार शुद्ध बनेगा। शुद्धाचरण, स्वाध्याय करने वाले मानव में आत्मविश्वास भरपूर रहता है। वह मस्तक ऊँचाकरके अपनी श्रेष्ठताओं का घोष करता है। ऐसे श्रेष्ठाचरणी, एकसंध, एकात्म राष्ट्रजीवन निर्माण हेतु विद्वानों का धर्म है कि यथास्थिति को त्याग कर पिछली परन्तु गलित हो गई परम्पराओं को छोड़कर आज के परिपेक्ष और आने वाले हजारों वर्षों की दूरदृष्टि रखकर इस हिन्दू भारत को जोड़ने वाली सभी पंथों को स्वीकार ऐसी आचार संहित का शीघ्रताशीघ्र निर्माण करें। यह बनने वाली संहिता व शास्त्रें के श्रेष्ठ मूल्यों से युक्त पर युगानुकूल वर्तमान को भी स्वीकार हो ऐसी सर्वयुगीन स्वीकृत संहिता का निर्माण परम आवश्यक लगता है। पुराना जो आज के परिपेक्ष में उपयुक्त है उसे स्वीकारें और जो नहीं है उसका दूरगामी द्रष्टि रखकर श्रृजन करें यही हिन्दूसमाज को चिरंजीवी बनाने का मार्ग हो सकता है। ❑

सर्व जन हिताय यज्ञ सम्पन्न

विश्व हिन्दू परिषद स्वर्ण जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में द. गुजरात के डेडियापाड़ा स्थित जानकी विद्यालय (रूपल डी. गुज्जर विद्यालय) में दि. 10 जुलाई 2015 को सर्वजन हिताय यज्ञ का आयोजन हुआ। जानकी विद्यालय के बालक/बालिकाओं एवं अभिभावक सहित व्यवस्थापक सदस्यों के साथ विश्व हिन्दू परिषद के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री अरविंदभाई ब्रह्मभट्ट जी ने सहभाग लिया।

जानकी फुलवारी प्रकल्प में आसाम एवं त्रिपुरा से आये 15 बालकों ने भी सर्वजन हिताय यज्ञ में उत्साह से भाग लिया।

विद्वान पं. महेन्द्रभाई रावल ने वैदिक मंत्रों से यज्ञ में जानकी विद्यालय-जानकी आश्रम, सेवा प्रकल्प एवं सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय विश्व कल्याण का संकल्प करके यज्ञ में आहुति प्रदान करवायी। जानकी विद्यालय की प्रमुख सुश्री वर्षाबेन शेठ ने प्रस्ताविक उद्‌बोधन एवं मा. अरविंदभाई ब्रह्मभट्ट जी ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया।

जानकी आश्रम के व्यवस्थापक श्री सोनजीभाई वसावा एवं लीलाबहन वसावा, जानकी विद्यालय के आचार्य श्री कल्पेष्ठाभाई वसावा एवं शिक्षक बंधुओं ने भी यज्ञ में सहभागी हुये।

-जानकी आश्रम
डेडियापाड़ा-गुजरात

❑

हिन्दू-संस्कृति की विशेषतायें

-जुगलकिशोर, केन्द्रीय मंत्री-विहिप

वस्तुत: हिन्दू संस्कृति इतनी महान् है कि इसकी विशेषतायें लिखना मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के लिए असंभव है। लाखों वर्षों से ऋषि-मुनि महर्षियों ने साधना-तपस्या के द्वारा संस्कृति का सृजन किया है। वेद-उपनिषद की रचना में किसी एक व्यक्ति का ही योगदान है-ऐसा नहीं है तथापि अनेक ऋषियों द्वारा गहन साधना के द्वारा आचरित मंत्रों को समाहित किया गया है। हिन्दू संस्कृति एक सर्वांगीण, सर्वोत्कृष्ट एवं सम्पूर्ण संस्कृति है। व्यष्टि एवं समष्टि से लेकर परमेष्टी तक की स्पष्टता हिन्दू विचारों में समाहित हैं। जीवन के सम्पूर्ण पहलू संजोये हुए हैं। धर्म एवं षट् दर्शन, से परिपूर्ण है हिन्दू संस्कृति। संस्कृति की विशेषताओं पर अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं तथा अन्य और भी लिखे जा सकते हैं, इसकी कोई सीमा नहीं है। आईये! कुछ विशेषताओं पर विचार करें-

- आत्मदर्शन अर्थात् आत्मा अजर-अमर हैं शरीर नाशवान् है। गीता के अनुसार ''अजो नित्य:शाश्वतोयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे''।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक:।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूत:॥ भगवद्गीता॥

- अर्थात् न इसे (आत्मा) शस्त्र काट सकते हैं न अग्नि जला सकती है, और न जल गीला कर सकता है, न वायु सुखा सकती है। ऐसा आत्म दर्शन है।
- पुनर्जन्म का सिद्धान्त-जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा "कर्मप्रधान विश्वकरि राखा। जो जस करहिं सो तस फल चाखा" अर्थात् कर्म के आधार पर उसी प्रकार की योनि में जन्म लेना होगा।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति "सत्य एक है-विद्वान लोग उसे विभिन्न प्रकार से कहते हैं" बहुधा एकत्व की पहिचान हिन्दू संस्कृति का प्रयत्न रहा है। बहुधा भाव की स्वीकृति से ही सहिष्णुता का जन्म होता है। हिन्दूधर्म सहिष्णुता की प्राण वायु से ही जीवित है। विविधता में एकता यही संस्कृति की विशेषता है।

- धार्मिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य हिन्दू संस्कृति को स्वीकार है किन्तु यह स्वातन्त्र्य स्वार्थ के लिए नहीं होकर समाज हित के लिए होना चाहिए।
- प्रकृति का शोषण नहीं अपितु दोहन अल्प मात्रा में सीमित होना चाहिए तभी हम व्यक्ति-समाज और प्रकृति में संतुलन-समन्वय स्थापित कर सकेंगे-यह हिन्दू संस्कृति का अंग है। पर्यावरण भी तभी शुद्ध रह सकेगा।
- नि:श्रेयस (पारलौकिक) तथा इहलौकिक अम्युदय की प्राप्ति, लोक और परलोक में मन्वय, जड़ और चेतन में समन्वय की प्रवृत्ति हिन्दू धर्म को मान्य है।
- उपरोक्त दृष्टिकोण से ही हिन्दू संस्कृति ने संगीत, कला साहित्य तथा सौन्दर्य आदि को प्रतिष्ठित स्थान दिया है।
- धर्म और जीवन का मेल अर्थात् धर्म के आधार पर ही अर्थ एवं काम की प्राप्ति करें तभी मोक्ष (परमसुख) की प्राप्ति हो सकेगी। धर्म-अर्थ काम एवं मोक्ष चतुष्पुरूषार्थ है।
- धारणाद् धर्म इत्याहुधर्मो धारयति प्रजा:। जिसे प्रजा सर्व हित के लिए धारण करती है वह धर्म है।
- भारत राष्ट्र आध्यात्मिक राष्ट्र है। अध्यात्म की ओर बढ़ना ही जीवन के सुख का मूल है। अत: मनुष्य जीवन में अध्यात्म पर सर्वाधिक बल दिया गया है।
- हिन्दुओं ने राजनीति और दण्डनीति का आविष्कार तो किया है किन्तु राजसत्ता को सर्वोपरि नहीं माना तथापि धर्मसत्ता और लोकसत्ता को सर्वोपरि माना है। गीता के अनुसार "परस्परं भावयन्त: श्रेय: परंवाप्स्यथ" अर्थात् परस्पर के सहभाव से परमश्रेय की प्राप्ति होती है। अत: यदि ऐसी आदर्श स्थिति पैदा होती है तो दण्डनीति की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।
- हिन्दू संस्कृति में त्याग-तपस्या का बड़ा महत्व है। किस व्यक्ति के जीवन में समाज, राष्ट्र तथा धर्म के लिए कितना त्याग है वही समाज में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त करता है। जैन समाज में साधु-साध्वियां तथा

अन्य महान संत समाज-राष्ट्र में सर्वाधिक पूजनीय हैं।

- 'मातृवत् परदारेषु' पर स्त्री को माता के समान समझकर व्यवहार करना। मातृदृष्टि यह विश्व में एकमात्र हिन्दूधर्म में है। यहां तक की भारतमाता, तुलसीमाता, गंगामाता आदि हमारी मातायें हैं।
- "गावः विश्वस्य मातरः एवं गावः सर्वसुखप्रदाः" अर्थात् गाय पशु नही अपितु माता है अतः हमारे यहां गो की रक्षा के लिए अनेक हिन्दुओं ने अपना बलिदान दिया है। गौमाता के नाम पर गोकुल, गोवर्धन, गोरखपुर, गोपाल, गोविन्द आदि अनेक सम्मानित नाम हैं।
- "धर्मो रक्षति रक्षितः अर्थात् जो धर्म की रक्षा करेगा धर्म उसकी रक्षा करेगा। धर्म की रक्षा के लिए पृथ्वीराज चौहान गुरू तेगबहादुर, वीर हकीकतराय, जोरावरसिंह, स्वामी श्रद्धानंद एवं स्वामी लक्ष्मणानंद जी जैसे धर्मवीरों ने मुस्लिम बनना स्वीकार नहीं किया एवं अपना सर्वस्व-बलिदान दे दिया। धर्म की रक्षा के लिए तो साक्षात् परमात्मा भी राम, कृष्ण की तरह अवतार लेते हैं।
- अतिथि देवो भव, मातृ-पितृ-गुरू देवो भव हिन्दू संस्कृति की विशेषता है। अतिथि, माता-पिता तथा गुरूदेव को भगवान की तरह मानकर उनकी सेवा तथा सम्मान करना हमारा धर्म है।

धृतिःक्षमा दमोखस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रह।
धी विद्या सत्यं अक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥
इन दस मानवीय गुणों को धर्म कहा है।
यतो धर्म स्ततो जय। सत्यमेव जयते।

-जहाँ धर्म है वहाँ विजय है। सत्य सदैव विजयी होता है।

- वसुधैव कुटुम्बकम्'-हमारी संस्कृति सम्पूर्ण विश्व के व्यक्तियों को एक परिवार मानती है। स्वामी विवेकानंद जी ने जब अपने शिकागो के प्रसिद्ध भाषण में मेरे अमेरिकन भाईयों और बहिनों से सम्बोधित किया तो हाल करतल ध्वनि से गूंज उठा कि भाई-बहिन कहने वाला यह कौन है यही वसुधैव कुटुम्बकम् है।
- हमारी संस्कृति यज्ञमयी है। गीता के अनुसार

यज्ञार्थात् कर्मयोन्यत्र लोकोयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंग समाचरः।

- अर्थात् परहित के लिए यज्ञ करो अन्य स्वार्थवश किया गया यज्ञ कर्म-बन्धन में बांधने वाला होगा। अतः परहित किया गया यज्ञ मुक्ति प्राप्त करायेगा। राष्ट्राय स्वाहा इदं न मम यह हमारा मंत्र है।
- सम्पूर्ण सृष्टि को ईश्वर अर्थात् सर्वशक्तिमान के स्वरूप में देखना-हिन्दू संस्कृति का व्यापक दृष्टिकोण दर्शाता है-अतः उपनिषद का प्रसिद्ध श्लोक है-

ईशावास्यामिदं सर्वं यत् किन्चित जगत्यां जगत।
तेन त्येक्तेन भुजीथा मा गृधः कस्यस्विधनम्॥

- यह सम्पूर्ण सृष्टि ईश्वर मय है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। अतः त्यागपूर्वक भोग करें तथा धन का लालच नहीं करें।
- हमारी संस्कृति ने संसार के प्राणी मात्र की सुखकी कामना की है:-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिदद्दुःरव भाग भवेत्
हे नाथ सब सुखी हो कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन धन धान्य के भंड़ारी॥

- भारतीय दर्शन ने सम्पूर्ण भूत प्राणियों में एक ही आत्म दर्शन किया है-

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः॥

पर स्त्री को माता, पराया धन मिट्टी के ढ़ेले के समान तथा सर्व प्राणियों में एक ही आत्मा को मानने वाला विद्वान कहलाता है।

- हिन्दू संस्कृति में चार वर्ण-ब्राह्मण (बुद्धिजीवि) क्षत्रिय (सेना) वैश्य (व्यापारी, कृषक) तथा शूद्र (कलाकार, मजदूर, कर्मचारी) की समाज व्यवस्था गुण-कर्म के आधार पर सोची गई है। गीता के अनुसार- "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण-कर्म विभागशः" चार वर्णों की रचना गुण-कर्म के आधार पर मेरे द्वारा

शेष पृष्ठ 17 पर.....

अखण्ड भारत संकल्प दिवस

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, जम्मू-कश्मीर गतिविधि गाँधी नगर जिला एवं अखण्ड भारत मोर्चा के सहयोग से शंकर विहार के श्री हनुमान मन्दिर मे अखण्ड भारत संकल्प दिवस के उपलक्ष्य मे एक संगोष्ठी 'जम्मू-कश्मीर की चुनौतीयां एवं समाधान' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन पूर्व सांसद एवं अखण्ड भारत मोर्चा के संस्थापक श्री बी.एल.शर्मा 'प्रेम सिंह शेर' द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता श्री अनिरुध राजपूत ने कश्मीर की समस्या प्रकाश डालते हुऐ कहा कि राज्य का अपना अलग से ही संविधान हो कश्मीर विश्व मे अनुठा उदाहरण है यही मूल समस्या है। कई बुद्धिजीवि वर्ग जनादेश करवाने की बात करते हैं मगर कश्मीरी पंड़ितो को तो वहां से भगा दिया गया है फिर कैसा जनादेश। श्री बी.एल.शर्मा 'प्रेम' ने अपने उद्बोधन मे कहा कि जो हालात कई दशकों से कश्मीर घाटी के बने हुऐ हैं ओर सरकारें लाचार नजर आ रही हैं क्योंकि पाकिस्तान की शह पर आतंकवादियों को कश्मीर मे शरण दी जा रही है। आई.एस.आई.एस. कश्मीर के लिए बड़ी चुनौती है। पाकिस्तान ने सीपीसी मे विश्व के विधान सभा अध्यक्षों को निमंत्रण दिया, परन्तु जम्मू-कश्मीर के विधान सभा अध्यक्ष को न बुला कर अपनी मंशा जाहिर कर दी है। मोदी सरकार द्वारा सीपीसी के आमंत्रण को ठुकरा कर अच्छा किया गया है। अखण्ड भारत मोर्चा के अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा ने कहा कि प्रत्येक शुक्रवार की नमाज के बाद जिस प्रकार आई.एस.आई.एस. के झंडें लहराने की गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा है, कश्मीर मे मजहबी जनून की आँधी फिर सर उठा रही है और अलगाववादियों के सुर पाकिस्तान के साथ मिल रहे हैं भारत सरकार की हिन्दूओं के पुर्नवास की योजना को करारा झटका है। जम्मू-कश्मीर गतिविधि के दिल्ली प्रांत प्रमुख ने कहा कि कश्मीर के लोगों को पंजाब से सबक लेना चाहिए कि उग्रवाद समाप्त होने के बाद ही पंजाब ने विकास किया है। जिला प्रमुख आचार्य रामगोपाल दीक्षित ने गोष्ठी का सफल संचालन किया। कार्यक्रम में विधार्थी श्री केशव शर्मा ने देशभक्ति की कविताऐं सुनाकर मंत्र मुग्ध कर दिया।

संगोष्ठी को सफल बनाने मे समाजसेवी श्री विपिन भारद्वाज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के श्री वीरेन्द्र शर्मा, श्री सुमित रोहिल्ला, धर्म जागरण विभाग के श्री राजकमल, श्री राजीव, अखण्ड भारत मोर्चा के श्री वीरेन्द्र जरयाल, श्री दीपक सिंह, श्री योगेश गोदिया आदि गणमान्य लोगों का प्रमुख योगदान रहा। ❑

आतंकियों ने टिफिन बम से विस्फोट कराया था

बिष्टूपुर स्थित बेल्डीह कालीबाड़ी मन्दिर के पीछे रविवार रात हुआ बम विस्फोट ऐ आतंकी घटना थी। आतंकियों ने यहाँ टिफिन बम से विस्फोट कराया था। इसके लिए उन्होंने इंप्रोवाइस्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) इस्तेमाल किया था।

बम विस्फोट की जाँच करने जमशेपुर पहुँची एनआईए की टीम और झारखंड एसटीएफ के बम निरोधक दस्ते ने इसकी पुष्टि की है। दोनों टीमों ने माना कि इस तरह की उच्च क्षमता वाले विस्फोटक का इस्तेमाल केवल आतंकवादी हीं कर सकते हैं। एनआईए की दो सदस्यीय टीम में आईपीएस अधिकारी डी.आर. सिंह और श्रीवासवानी शामिल हैं। दोनों अधिकारी सोमवार रात घटनास्थल का मुआयना कर चुके थे। मंगलवार को भी इन्होंने करीब आठ घंटे तक घटना के विभिन्न पहलुओं की चांज की। एनआईए की टीम और एसटीएफ का बम निरोधक दस्ता दोपहर तीन बजे एक बार फिर घटनास्थल पर पहुँचा और आगे की जाँच जारी है। ❑

सभ्यताओं का टकराव

'आतंक का कोई रंग नहीं होता और न ही कोई धर्म या मजहब' एक ऐसा अटूट विश्वास सामान्य जनता में विशेषत: हिन्दुओं में बैठा दिया गया है जो उन्हें मित्र व शत्रु की पहचान से ओझल किये रखता है। आज जिहाद रुपी मजहबी आतंकवाद एक चुनौती के रुप में पुन: उभर रहा है और इसके विरुद्ध देश में एकजुटता बनाना अति आवश्यक है। परंतु इसके लिए विभिन्न सम्प्रदायों में आपसी सौहार्द होना भी उतना ही आवश्यक है।

सन् 47 में एक विशेष सम्प्रदाय (मुसलमानों) की ही मांग 'हिन्दुओं के साथ न रहने की जिद्द' पर देश का विभाजन हुआ था जिसे भुलाया नहीं जा सकता। स्वतन्त्रता के बाद आज 68 वर्ष हो गए और एक समाज अपने संस्कार और वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा के कारण बाहें पसारें खड़ा है कि आओ गले मिलें व साथ साथ रहें, उसके लिये वह प्रत्येक स्थिति में आवश्यकता से अधिक सहायक भी रहता है, फिर भी वे अपनी अलगाव की मानसिकता से बाहर नहीं आ पा रहें हैं। हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था ने एक असंवैधानिक नकारात्मक राजनैतिक विवशता ऐसी बना दी है कि धर्म के आधार पर समाज को अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक में बांट कर पक्षपात पूर्ण योजनायें केवल अल्पसंख्यकों के लिए बनाई जाती है और उसका अधिकतम उपयोग मुसलमान ही करते आ रहे हैं।

इस सबके उपरान्त भी उनकी संस्कृति कट्टरता को बढ़ावा देकर अलगाववादी व आतंकवादी बनाकर देश को अपने ही अनुसार इस्लाम के झण्डे के नीचे लाना चाहती है और कोई भी मध्यम मार्ग अपनाना ही न चाहे तो अविश्वासी या गैर ईमान वाले कब तक बाहें पसारें अपने को ही लूटता देखते रहें?

इसे आप कैसे परिभाषित करेंगें कि जब आतंकी याकूब को फांसी लगने के समय (सुबह 7.00 बजे) से लगभग 2 घंटे पूर्व (सुबह 4.56 बजे) तक सुप्रीम कोर्ट के जजों को न्याय के उच्च मापदंडों को अपनाने के बाद भी अभियुक्त के अधिवक्ताओं द्वारा विवश कर देना क्या किसी गहरे षड्यंत्र की ओर संकेत नहीं कर रहा था? इस सबमें पर्दे के पीछे कौन-कौन था और लाखों-करोड़ों रुपया किस-किस ने बहाया, यह सब सरकार की जांच का विषय अवश्य बनना चाहिए। यह कहना संभवत: गलत नहीं होगा कि वही एक विशेष समुदाय के ही कट्टरपंथी भी इस सबके पीछे हो जो 1993 के बम विस्फोटो में थे?

इस पर भी हम यह क्यों भूल जाते हैं कि आतंकवादियों को आतंकी गतिविधियों के लिए दिन, दिनांक व समय का विशेष महत्व होता है। उसी के अनुसार मुम्बई में 12 बम विस्फोट शुक्रवार (12 मार्च 1993) व दोपहर में विभिन्न स्थानों पर उस समय किये गये थे जब उसी विशेष समुदाय के लोगों को भारी संख्या में पूजा ग्रहो में एकत्रित होना था। क्या यह किसी आतंकवादी के धर्म या मजहब की और संकेत नहीं करता? इससे सुनिश्चित होता है कि इन विस्फोटों में एक ही धर्म के लोग ज्यादा से ज्यादा संख्या में हताहत हो ऐसा लक्ष्य रहा होगा?

मजहबी आतंकवाद की दृष्टी से एक प्रश्न यह भी है कि आतंकी याकूब मेमन के जनाजे को जिस भीड़ ने हीरो बनाया क्या वह उसके ही मजहब की नहीं थे?

आज जब विश्व में इस्लामिक स्टेट के खौफनाक इरादों के कारण जिहादी मानसिकता अपने चरम पर है और समस्त मानवाधिकारवादी व संसार के अनेक नीतिनियंता इस दूषित प्रवृत्ति से परिचित हैं और उनकी विधाओं व शिक्षाओं में आज के युग के अनुसार आवश्यक संशोधन करवाने के लिए प्रयासरत है तो बार-बार यह कहा जाना कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, क्या आत्मघाती व अन्यायपूर्ण नही होगा? अत: आज सभ्यताओं के टकराव को नकारा नहीं जा सकता।

प्रेषक : **विनोद कुमार सर्वोदय**
गाजियाबाद

रक्षाबंधनः इतिहास के झरोखे से आज तक

-विनोद बब्बर

सावन का हर दिन त्यौहार होता है लेकिन सावन पूर्णिमा अर्थात इस माह का अंतिम दिन तो जैसे त्यौहारों की अनंत श्रृंखला का अनमोल मोती है। राखी संस्कृत शब्द 'रक्षिका' का अपभ्रंश हैं। इसका अर्थ है- रक्षा करना, रक्षा करने को तत्पर रहना या रक्षा करने का वचन देना। बेशक भाई-बहन का प्रेम और बहन के प्रति भाई का कर्तव्य इसी एक दिन तक सीमित नहीं है परंतु श्रावणी, रक्षाबंधन, राखी, सलूनो, पहुंची जैसे नामों से जाने जाने वाले इस त्यौहार के साथ प्रेम, सद्भावना, साम्प्रदायिक एकता, सामाजिक सौहार्द की जितनी कथाएं जुड़ी हुई शायद ही कोई अन्य त्यौहार रक्षासूत्र के इस पर्व की बराबरी भी कर सकता हो।

वैदिक काल में श्रावणी पर्व का महत्व अत्यधिक था। इसी दिन गुरुकुल में विद्यार्थियों का विद्यारंभ संस्कार होता था, आचार्य विद्यारंभ दिवस के दिन ब्रह्मचारियों को रक्षा सूत्र के रुप में विद्याध्ययन पूर्ण करने का संकल्प सूत्र बांधते थे तथा पुराना यज्ञोपवीत उतार कर नवीन धारण किया जाता था। बेशक बदलते दौर में बहुत कुछ बदला है लेकिन जिन त्यौहारों ने हमारी संस्कृति को बचाए रखा है उनमें रक्षाबंधन प्रमुख है। सदियों चले आ रहे भाई बहनों के पवित्र प्रेम का साक्षी यह त्यौहार सारे भारत में समान उत्साह और श्रद्धा से मनाया जाता हैं।

इस पर्व के विषय में प्रचलित कथाओं के अनुसार देवताओं व दानवों के युद्ध के समय देवराज की पत्नी शची के अपने पति इंद्र को पहला रक्षासूत्र बांधा था। शची ने अपने पति की विजय कामना के लिए उसके दाहिने हाथ में रक्षा सूत्र और चांवल-सरसों को बांधकर उनकी सुरक्षा और विजय की कामना की थी जिससे वे असुरों पर विजय प्राप्त कर सके थे।

एक अन्य किंवदंती के अनुसार शकुंतला को राजा दुष्यंत ने श्राप वश पहचानने से इंकार कर दिया। कण्व ऋषि के आश्रम में 'भरत' का जन्म हुआ तो ऋषि उसके हाथ में रक्षा सूत्र बांधकर आशीर्वाद दिया था, 'मां-बाप और गुरू के अलावा तुम्हें स्पर्श करने वाले को यह रक्षा सूत्र सर्प बनकर डस लेगा'। ज्ञातव्य हो बालक भरत शेर, चीते संग खेला करता था। एक दिन दुष्यंत वहां पहुंचा तो उसने बालक के नीचे गिरा हाथ से रक्षा कवच को पुनः बांध दिया। इस तरह बिछड़े दुष्यंत, शकुंतला और भरत के मिलन का कारण रक्षाकवच बना।

महाभारतकाल में द्रोपदी के श्रीकृष्ण की अंगुली पर पट्टी बांधने की कथा भी इस पर्व से जुड़ी हैं। कहा जाता है कि अंगुली पर बांधी पट्टी से कृतज्ञ श्रीकृष्ण ने बहन द्रोपदी का चीर इतना बढ़ाया कि दुःशासन परास्त हो गया।

यही नहीं राजा बलि से भी इसका संबंध जोड़ा जाता है। कहा जाता है कि विष्णु राजा बलि से भूमि दान में पाकर वामन रूपी में तीन पगों में सारा आकाश, पाताल और धरती नाप ली। राजा बलि की भक्ति से प्रसन्न विष्णु को उसकी इच्छा का सम्मान करते हुए दिन-रात उसके सामने रहना पड़ा। विष्णु के वापस न आने से परेशान लक्ष्मी ने नारद की सलाह पर बलि को रक्षासूत्र बाँधा और उपहार में विष्णु को पाकर अपने साथ ले जाती हैं। आज भी सभी धार्मिक अनुष्ठानों में यजमान को ब्राह्मण एक मंत्र (येन बधो बलि राजा दानवेन्द्र महाबलः तेन त्याम प्रतिबध्नामी माचल मचल) पढकर रक्षासूत्र बाँधते हैं जिसका अर्थ होता है, 'जिस रक्षा सूत्र से महान शक्तिशाली राजा बली को बाँधा गया था, उसी सूत्र से मैं आपको बाँध रहा हुँ, आप अपने वचन से कभी विचलित न होना।'

युनान से विश्वविजेता बनने निकले सिकंदर से जुड़ा एक प्रसंग भारत और राखी की महत्ता बताता है। सिकंदर की प्रेमिका ने उससे पहले भारत पहुंचकर यहां के हिंदू राजा पोरस को राखी बांध कर अपना मुंहबोला भाई बनाया और सिकंदर को न मारने का वचन लिया। युद्ध के दौरान पोरस ने जब सिकंदर पर घातक प्रहार हेतु अपना हाथ उठाया ही था कि रक्षा-सूत्र को देखकर उसके हाथ रूक गए। अनेक पौराणिक प्रसंगों की तरह राखी के साथ महारानी कर्मवती द्वारा हुमायूँ को राखी भेजकर रक्षा को कहने का एक और ऐतिहासिक प्रसंग भी जुड़ा है। तो चन्द्रशेखर आजाद द्वारा एक मुंहबोली बहन की मदद के लिए अपनी गिरफ्तारी के लिए तैयार होने की मार्मिक कथा देशभक्त क्रांतिकारियों के उच्च चरित्र की बानगी है।

बरसात में हमारे शरीर में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते हैं। कुछ रोग भी लग सकते हैं। अत: किसी समय राखी का अर्थ था छोटी-छोटी पोटलियों में जड़ी -बूटियों को धागे में पिरोकर हाथ में बांधा जाता था। इससे अनेक प्रकार की व्याधियों से बचाव संभव था। इसलिए कहा भी गया है-

सर्व रोगो ऋशमनं सर्व शुभ विनाशकम। सक्रिय क्रिते नान्देकम पाशमनं रक्षा कृता भवेत।

आज समय, काल, परिस्थितियों ने देश से परिवेश तक बहुत कुछ बदला है लेकिन राखी के प्रति उत्साह बरकरार है। हाँ परम्परागत सूत का धागा आज शानदार डिजाइनर राखियों में बदल चुका है। रेशम के धागों से सोने, चांदी के तारों तक, हीरे जड़ित ब्रास्लेट से राडो घड़ियों तक बहुत कुछ बाजार में है। भौतिकता के प्रभाव ने बहनों की आपेक्षाओं को भी बढ़ाया है। जहां आर्थिक दबाब राखी की पवित्रता पर हावी होने लगते हैं वहां प्यार कम और प्रदर्शन ज्यादा हो जाता है।

आपसी सौहार्द तथा भाई-चारे की भावना से ओतप्रोत रक्षाबंधन का त्योहार हिन्दुस्तान में अनेक रूपों में दिखाई देता है। महाराष्ट्र में यह त्योहार नारियल पूर्णिमा या श्रावणी के नाम से जाना जाता है तो तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र और उड़ीसा के दक्षिण भारतीय ब्राह्मण इसे अवनी अवित्तम कहते हैं। कई स्थानों पर इस दिन नदी⇨

.....पृष्ठ 13 का शेष

(ईश्वर) रची गई है-जो शाश्वत है।

- चार आश्रमों की समाज व्यवस्था भी हिन्दू धर्म की विशेषता है-

1. ब्रह्मचर्याश्रय 25 वर्ष की आयु तक मनुष्य शिक्षा-दीक्षा, ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हुए गुरूकुलों में करें।
2. गृहस्थाश्रम (26 वर्ष से 50 वर्ष तक की आयु) परिवार बसाकर योग्य संस्कारित संतति का पालन तथा समाज का पोषण करना।
3. वानप्रस्थाश्रम (56 वर्ष से 75 वर्ष की आयु) समाज सेवा करते हुए अपने जीवन के अनुभवों द्वारा राष्ट्र हित करें। (अहर्निश सेवा महे)
4. सन्यास आश्रम-आध्यात्मिक उन्नति के लिए त्याग-तपस्या करते हुए मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर हों। यह व्यवस्था मानव को नर से नारायण बनाने वाली है।

- हिन्दू-संस्कृति ज्ञान-विज्ञान से भरपूर है। भारतीय विज्ञान ने सृष्टि के अनेक रहस्यों, ब्रह्माण्ड में ग्रह, तारे, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्रमा तथा भूगर्भ की अनेक रहस्यमयी खोजों द्वारा पता लगाया है। संस्कृत जैसी देववाणी, वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, त्रिपिटिक, गुरूग्रन्थ साहब जैसे महान ग्रन्थों की रचना द्वारा सब प्रकार का ज्ञान-विज्ञान विश्व को दिया है। सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनायेंगे अर्थात् कृण्वंतो विश्वमार्यम्-यह उद्घोषणा हिन्दू संस्कृति की विशेषता है। ❑

⇨या समुद्र के तट पर स्नान करने के बाद ऋषियों का तर्पण कर नया यज्ञोपवीत धारण किया जाता है। नारियल और पुष्प चढ़ाये जाते हैं। माना जाता है कि नारियल में तीन आंखें होती हैं जो भगवान शिव के प्रतीक हैं। यह विशेष उल्लेखनीय है रक्षाबंधन के पवित्र दिन ही विश्व प्रसिद्ध अमरनाथ यात्रा छड़ी मुबारक के साथ संपन्न होती है। इस तरह सावन (श्रावण) माह का हर दिन अपने साथ एक इतिहास और परम्परा की धरोहर लिए न केवल भारतीय जनमानस अपितु नेपाल, भुटान सहित दुनिया के अनेक देशों के लोगों में उत्साह का संचार करता है। ❑

भारत का अखण्ड स्वरूप

-कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री

कहा जाता है कि वीर सावरकर की अस्थियाँ अभी भी उनके वंशजों के पास सुरक्षित हैं। वे अपनी मृत्यु से पूर्व वसीयत कर गये थे कि उनकी अस्थियाँ सिन्धु नदी में तभी प्रवाहित की जायें जब भारत एक बार फिर से अखंड हो जाये। अखंड भारत का क्या अर्थ है? पन्द्रह अगस्त के दिन इसकी चर्चा करना सामयिक होगा क्योंकि इसी दिन भारत का विभाजन हुआ था। भारत की परिभाषा दो प्रकार से की जाती है। पहली सांस्कृतिक भारत और दूसरा भौगोलिक भारत। सांस्कृतिक भारत की सीमा तो निश्चित नहीं की जा सकती क्योंकि वह अवधारणा मानचित्र पर नहीं बल्कि हृदय में होती है। इसीलिए कहा जाता है कि किसी भी देश का सांस्कृतिक पक्ष अमूर्त होता है और भौगोलिक पक्ष मूर्त होता है। भौगोलिक भारत की सीमाओं का संकेत विष्णु पुराण में दिया गया है- समुद्र के उत्तर में और सागर के दक्षिण में जो भू भाग फैला हुआ है वह भारत कहलाता है और इसकी संतान भारती कहलाती है। पुराणकार ने स्पष्ट ही इसमें भारत की भौगोलिक सीमाएँ निश्चित की हैं। लेकिन इसके भीतर रहने वाले लोग कौन हैं? यदि पुराणकार इस भू-भाग को केवल निर्जीव भौगोलिक इकाई मानता तो वह कहता कि हिमालय और सागर के बीच के इस क्षेत्र में रहने वाले लोग भारती या भारतीय हैं। लेकिन पुराणकार ने ऐसा नहीं कहा। उसने कहा कि इसकी संतानें भारती के नाम से जानी जाती हैं। यदि इस भू भाग में रहने वाली संतानें हैं तो भारत, भारत न रह कर भारत माता की अवधारणा में परिवर्तित हो जाता है। निर्जीव भू भाग में रहने वाले लोगों को निवासी न कह कर संतान कहने का अर्थ है कि पुराणकार भारत को जमीन का निर्जीव टुकड़ा नहीं बल्कि जीवन्त ईकाई मानता है ।

जीवन्त या चेतनायुक्त के खंडित होने का ही दुख या दर्द होता है। खंडित शरीर पीड़ा दायक है इसलिये उसे फिर से अखंड बनाना है ताकि भारत माता की पीड़ा समाप्त हो जाये। भारत के इस अखंड स्वरुप को चिह्नित करने के लिये हम कितना पीछे जा सकते हैं? स्पष्ट ही

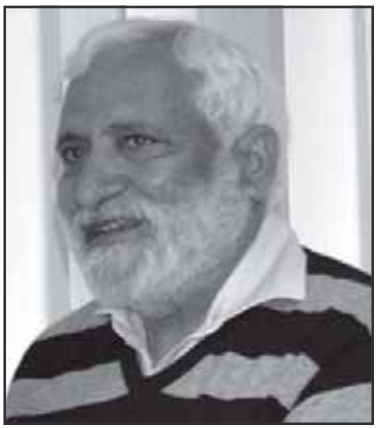

उस काल तक जब अफगानिस्तान भारत के इस भूभाग के भीतर ही गिना जाता था और वहाँ के निवासी भी इसकी संतान में गिने जाते थे। लेकिन काल प्रवाह में अफगानिस्तान में रहने वाले लोगों ने धीरे-धीरे भारत माता के व्यापक स्वरुप को नकार दिया और स्वयं को अलग मानना शुरु कर दिया। तब उस सीमित भू भाग को भी भारत माता का अंग मानना बंद कर दिया। यानि भारत माता के शरीर के उस अंग को लकवा मार गया। लेकिन यह पुरानी घटना है। बहुत पुरानी। ज्यादा से ज्यादा डेढ हजार साल पुरानी तो है ही।

लेकिन भारत माता के शरीर के एक हिस्से को लकवे मारने की बीमारी शुरु हो गई तो उसके शरीर के दूसरे हिस्सों में भी फैलने का खतरा शुरु हो गया। यदि उसी वक्त इलाज शुरु हो जाता तो शायद बचाव हो सकता था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। शायद हो ही नहीं सकता था। जिस प्रकार इस्लामी विदेशी हमले शुरु हो गये थे, उसका मुकाबला करने के लिये भारतीय समाज की भीतरी संरचना को उसका मुकाबला करने के अनुकूल बनाना था। भारतीय समाज उसी प्रक्रिया में लग गया था। अंग्रेजों के आने के बाद पक्षाघात की यह बीमारी और तेज हो गई। या कहना चाहिये इलाज के नाम पर बदमाश डाक्टर ने यही निर्णय किया कि लकवाग्रस्त हिस्से को काट दिया जाये। इसके लिये लम्बे समय तक लकवाग्रस्त इलाके को चिह्नित किये जाते रहने का पाखंड चलता रहता। अंत में यहाँ से जाने से पहले उन्होंने पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान नाम से, भारत माता के दो अंगों को काट दिया। इसी पूर्वी पाकिस्तान ने कालान्तर में

अपना नाम बांग्लादेश कर दिया। जाहिर है इस अंग भंग से भारत माता को उस समय तो वेदना हुई होगी, अब तक भी हो रही है।

लेकिन प्रश्न यह है कि इसके स्वरुप को पुनः अखंड कैसे किया जाये? लकवाग्रस्त हिस्से को फिजियोथैरेपी से अनेक बार चिकित्सक ठीक कर देते हैं। लकवाग्रस्त हिस्सा फिर सामान्य हो जाता है। लेकिन फिजियोथैर्पी तो तभी तक संभव है जब तक लकवाग्रस्त हिस्सा शरीर से काटा नहीं जाता। बांग्लादेश और पाकिस्तान तो भारत से काटे जा चुके हैं। बांग्लादेश का अर्थ है आधा बंगाल और पाकिस्तान का मतलब है सिन्ध, बलोचिस्तान, पूर्वी पंजाब और खैबर पख्तूनख्वा। ध्यान रहे पुराने साहित्य में सिन्ध के अतिरिक्त बाकी के ये क्षेत्र पंजाब ही कहलाते थे। खैर वर्तमान स्थिति में भारत को पुनः अखंड बनाने के लिये क्या प्रयास हो सकते हैं, यह महत्वपूर्ण है।

सबसे पहले तो डॉ. भीम रावजीराव आम्बेडकर की बात की जाये, जिन्होंने विभाजन से कुछ समय पूर्व थाटस आन पाकिस्तान लिख कर खासी हलचल मचा दी थी और उन्हें इसके लिये तीखी आलोचना का शिकार भी होना पड़ा था। आम्बेडकर ने आशा व्यक्त की थी कि विभाजन के बाद कुछ ही साल में उन लोगों को, जिन्होंने पाकिस्तान के निर्माण के लिये जी जान लगाई थी, अपनी गलती का एहसास हो जायेगा और पाकिस्तान फिर अपने मूल से जुड़ जायेगा। आम्बेडकर की कल्पना में यह काम दस साल के भीतर हो जायेगा, लेकिन भारत माता के दुर्भाग्य से उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पायी। इतना ही नहीं पाकिस्तान सरकार का विरोध भारत के प्रति बढ़ता ही गया है।

एक हल अपने वक्त में लाला हरदयाल ने सुझाया था। यह पिछली शताब्दी के दूसरे या तीसरे दशक की बात थी। उस समय तक पाकिस्तान और बांग्लादेश नहीं बने थे। इसलिये लाला हरदयाल की वेदना अफगानिस्तान को लेकर थी। उन्होंने सुझाव दिया था कि अफगानिस्तान का पुनः हिन्दूकरण करना होगा। आज की शब्दावली में कहें तो वहाँ के लोगों की घर वापिसी। भारत को अखंड करने का और सुरक्षित करने का यही तरीका है। हिन्दूकरण से शरीर के उस हिस्से का लकवा दूर हो जायेगा और वह भारत के अन्य सामान्य अंगों की तरह व्यवहार करने लगेगा। यानि हिन्दूकरण, लाला हरदयाल के लिये फिजियोथ्रेपी थी। लेकिन इसका एक दूसरा अर्थ भी है। लकवा क्यों हुआ है, इसका कारण भी ढूँढ लिया गया है। भारत के जिस हिस्से की संतानों का मतान्तरण हो गया, कालान्तर में उस हिस्से को लकवा मार गया और वह हिस्सा धीरे-धीरे देश से ही अलग हो गया। पहले मानसिक तौर पर और बाद में भौगोलिक तौर पर। उसी का इलाज लाला हरदयाल ने ढूँढा था। हिन्दूकरण या फिर आर्यसमाज की शब्दावली में कहें तो शुद्धीकरण (लाला हरदयाल आर्यसमाजी थे) और आज की शब्दावली में कहना हो तो घर वापिसी। बहुत बाद में प्रो. बलराज मधोक ने इसके लिये भारतीयकरण शब्द का प्रयोग किया। लेकिन वह अफगानिस्तान और पाकिस्तान के लोगों के लिये नहीं था बल्कि भारत के भीतर के इस्लाम मताबलम्बियों के लिये था। लेकिन लाला हरदयाल द्वारा सुझाए गये इस इलाज का उत्तर भी आम्बेडकर ने ही दिया था। आम्बेडकर ने इस इलाज को नामुमकिन बताया था। उनका कहना था कि इसके लिये जितना पैसा चाहिये था वह कहाँ से आयेगा? दूसरा इस्लामी देशों में इस्लाम से बाहर जाने की अनुमति नहीं है। इस अपराध की सजा मौत है। ऐसे हालात में यह प्रयोग संभव ही वहीं है। आम्बेडकर इस मामले में यथार्थ के ज्यादा नजदीक दिखाई देते हैं।

एक तीसरा तरीका भी है, जिसका प्रयोग अभी भी कुछ सीमा तक किया जा रहा है। लकवाग्रस्त और काट दिये गये क्षेत्र के स्थानों से भावनात्मक जुड़ाव बनये रखना। गुरु नानक देव जी के जन्मस्थान ननकाना साहिब जाते रहना। कटासराज मंदिर की तीर्थ यात्रा करना, हिंगलाज देवी के मंदिर की तीर्थ यात्रा इत्यादि। बंगलादेश में ढाकेश्वरी मंदिर की तीर्थयात्रा को पुनः प्रारम्भ करना। इसी प्रकार पाकिस्तान और बांग्लादेश में कुछ इसी प्रकार के अन्य ऐतिहासिक स्थानों की पहचान की जा सकती है। यह प्रयोग कुछ सीमा तक तो चालू है, लेकिन इसका और विस्तार किया जा सकता है। ❑

यूपी में सच्चर की सिफारिशों पर अमल करने की तैयारी

लखनऊ । उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी (सपा) सरकार जारी मानसून सत्र में सच्चर कमेटी की सिफारिशों को लागू करने का प्रस्ताव विधानसभा के पटल पर रख सकती है। वर्ष 2017 में होने वाले विधानसभा चुनाव में अल्पसंख्यक समुदाय के समर्थन की कवायद के तहत सरकार का यह कदम महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। इसके जरिये सपा वर्ष 2012 में अपने चुनावी घोषणा में अल्पसंख्यकों को दिए गए वादों को भी निभाएगी। वर्ष 2007-08 में अस्तित्व में आई सच्चर कमेटी की रिपोर्ट पिछले आठ सालो से अधिक समय से प्रदेश में लागू नहीं हुई है। रिपोर्ट में मुस्लिमों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण की वकालत की गई है।

आधिकारिक सूत्रों यहाँ बताया कि अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मोहम्मद आजाम खां प्रस्ताव सदन में रखेंगे जिसमें राज्य की कुल जनसंख्या की 18 फीसदी मुस्लिम आबादी को सरकारी और उससे जुड़े उपक्रमों में 20 फीसदी आरक्षण का प्रावधान प्रस्तावित किया गया है। सूत्रों ने बताया कि अल्पसंख्यक कल्याण विभाग ने सच्चर कमेटी के प्रस्ताव को लागू करने का ब्लूप्रिंट तैयार कर लिया है और इसे मानसून सत्र के दौरान सदन के पटल पर रखने का विचार है। ब्लूप्रिंट में मुस्लिमों के शैक्षिक स्तर में सुधार के लिए मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में स्कूलों की दशा सुधारने का प्रावधान है। इसके अलावा कक्षा 9 से 12 तक मुस्लिम छात्राओं के लिए स्कूल की व्यवस्था अलग से करने और इन स्कूलों में महिला शिक्षिकाओं की तैनाती का प्रस्ताव है। ❑

छड़ी मुबारक प्रार्थना के साथ अमरनाथ यात्रा का समापन चरण शुरू

श्रीनगर (भाषा)। साधओं ने अमेश्वर मंदिर में सोमवार को छड़ी मुबारक की विशेष प्रार्थना की, जिसके साथ ही अमरनाथ गुफा मंदिर की सालाना यात्रा का समापन चरण शुरू हो गया।

भगवान शिव के गदा के संरक्षक महंत दीपेन्द्र गिरि के नेतृत्व में साधुओं ने श्रीनगर में बादशाह चौक स्थित अमरेश्वर मन्दिर में सोमवार सुबह वैदिक मंत्रोच्चार के बीच छड़ी की स्थापना की। अधिकारियों ने बताया कि छड़ी मुबारक को 25 अगस्त तक दर्शन के लिए मन्दिर में रखा जाएगा। यहाँ शंकराचार्य मन्दिर और शारिका भवानी मन्दिर में पिछले हफ्ते छड़ी मुबारक की विशेष प्रार्थना की गई। उन्होंने बताया की पारंपरिक छड़ी पूजन मन्दिर में 19 अगस्त को नाग पञ्चमी के अवसर पर होगा जिसमें पवित्र गदा को अनंतनाग जिले में 45 किलोमीटर के पारंपरिक पहलगाम मार्ग के जरिए पवित्र गुफा तक ले जाया जाएगा।

महंत गिरि ने बताया कि पहलगाम स्थित आधार शिविर के रास्ते में पड़ने वाले विभिन्न मन्दिरों में विशेष प्रार्थना की जाएगी। पवित्र गदा 29 अगस्त को अमरनाथ पहुँचेगी जहाँ रक्षाबंधन के अवसर पर विशेष प्रार्थना की जाएगी और इसके साथ 59 दिन की सालाना तीर्थयात्रा संपन्न हो जाएगी। सालाना तीर्थयात्रा आधिकारिक रूप से दो जुलाई को शुरू हुई थी। अब तक 3.47 लाख से अधिक तीर्थयात्रियों ने पवित्र गुफा में पूजा अर्चना की है। ❑

सिंहस्थ की तैयारी

भोपाल (सी.एन.एफ.) उज्जैन में अगले वर्ष होने वाले सिंहस्थ के लिए उज्जैन कस्बा एवं घट्टियां तहसील के 18 गाँवों की 3414-52 हेक्टेयर भूमि अस्थायी प से अधिग्रहीत की गई है। सिंहस्थ के लिए उज्जैन तथा इंदौर संभागों में विभिन्न विभागों के साढ़े तीन हजार करोड़ रू. लागत के निर्माण कार्य प्रस्तावित हैं। अभी तक 267 कार्य शासन ने स्वीकृत किये जिनमें से 158 कार्य प्रारंभ हो चुके हैं। इन पर 2203 करोड़ रू. से अधिक की राशि खर्च होने का अनुमान है तथा करीब 900 करोड़ रू. खर्च हो भी चुके हैं। सभी कार्य आगामी फरवरी 2016 माह तक पूरा करने का लक्ष्य है। -सी.एन.एफ.

राष्ट्रधर्म मासिक अक्टूबर २०१५ **मूल्य रु० ५०/-**

(विजयादशमी के शुभ अवसर पर प्रकाश्य)

पं. दीनदयाल उपाध्याय : चिन्तन विशेषांक

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्मशती वर्ष प्रारम्भ होने जा रही है। वे 'राष्ट्रधर्म' (मासिक) के संस्थापक थे। उन्होंने उनके माध्यम से आज की पतनोन्मुखी राजनीति और दुर्गतिमुखी समाज-दशा के परिप्रेक्ष्य में उनके समस्त व्यक्तित्व और कृतित्व की निष्कलुषता, आचार और विचार दोनों की शुचिता एवं प्रामाणिकता को लोकमानस के समक्ष पुनः-पुनः प्रस्तुत करने की नितान्त आवश्यकता अपरिहार्य है। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी 'राष्ट्रधर्म' के संस्थापक थे, यह हम सबको पता ही हैं उनके जीवन के वे वर्ष, जब वे रा. स्व. संघ के स्वयंसेवक बने; वह विद्यार्थी थे; प्रचारक थे; फिर 'राष्ट्रधर्म' मासिक, 'पाञ्चजन्य' (साप्ताहिक) की संस्थापना का उपक्रम कर उनके माध्यम से राष्ट्र-चिन्तन को नया दिशा-बोध देने के लिए राष्ट्रवादी पत्रकारिता को अनेक नये आयाम दिये। जनसंघ के प्रारम्भिक काल १९५१ से १९६७ तक के एक दिव्य ज्योतिर्मान ध्रुवतारा बने। वास्तव में समाज एवं राष्ट्र के लिए वे दिन कितने महत्त्वपूर्ण रहे, इस पर अपेक्षित दुर्लभ सामग्री से समन्वित 'राष्ट्रधर्म' का आगामी अक्टूबर, २०१५ अंक केन्द्रित रहेगा।

उपुर्यक्त काल-खण्ड में उनके दिखाये दीपक के प्रकाश में इस सनातन हिन्दू राष्ट्र को परम वैभव के शिखर पर पहुँचान में आगामी पीढ़ी को उनके चिन्तन से श्रेष्ठ प्रेरणा, उत्साह, आमबल का पाथेय उपलब्ध होगा। साथ ही उनके कतिपय दुर्लभ चित्र भी इस विशेषांक में समाहित होंगे। उत्तम कागज पर मुद्रित यह आकर्षक विशेषों दिग्दर्शक यन्त्रवत् होगा, जिसे निश्चय ही आप सँजोकर रखना ही नहीं, इष्टमित्रों को उपहारस्वरूप देना भी चाहेंगे।

विशेष सम्पर्क :

1. अभिकर्त्ता/पाठक-बन्धु अपनी सम्भावित बढ़ी हुई माँग से १५ सितम्बर, २०१५ तक कृपया अवश्य सूचित करने का कष्ट करें।
2. विज्ञापनज्ञाता बन्धु कृपया १५ सितम्बर, २०१५ तक अपना विज्ञापन भेजकर हार्दिक सहयोग करने का कष्ट करें।

प्रबन्धक राष्ट्रधर्म 'मासिक'

संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-२२६००४

दूरभाष : ०५२२-४०४१४६४ (सम्पादकीय) २६६१३८४, २६६१३५८ (व्यवस्था)

E-mail: mgr.rdm.1947@gmail.com, editor_rdm_1947@rediffmail.com

राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की पत्नी का निधन

नई दिल्ली। राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की पत्नी शुभ्रा मुखर्जी का 18 अगस्त मंगलवार को निधन हो गया। यह पिछले कुछ समय से बीमार थी। उनकी मौत पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत कई प्रमुख नेताओं ने शोक जताया है। रवीन्द्र संगीत की प्रतिष्ठित गायिका शुभ्रा मुखर्जी 74 वर्ष की थी। उन्होंने सुबह 10 बजकर 51 मिनट पर आर्मी रिसर्च एंड रेफरल हॉस्पिटल में अंतिम सांस ली। वह 11 दिनों तक अस्पताल में भर्ती रहीं। राष्ट्रपति भवन के प्रवक्ता वेणु राजमणि ने एक बयान में कहा, 'गहरे दुःख के साथ यह सूचित किया जाता है कि देश की प्रथम महिला श्रीमती शुभ्रा मुखर्जी का सुबह (18 अगस्त 2015) को निधन हो गय। उनका स्वर्गवास सुबह 10:51 मिनट पर हुआ।' शुभ्रा मुखर्जी को 7 अगस्त को आर्मी हॉस्पिटल में उस समय भर्ती कराया गया था जब उन्होंने सांस लेने में तकलीफ और बेचैनी की शिकायत की थी। जिसके बाद उन्हें आईसीयू में रखा गया था।

पर्यावरण रक्षनार्थ वृक्षारापेण कार्यक्रम-भारतीय वृक्षों का महत्त्व

आपको विदित ही है कि विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना सन् 1964 में जन्माष्टमी के दिन संदीपनी आश्रम मुम्बई में हुई थी। 50 वर्ष पूर्व होने पर पूरे विश्व में यह (वर्ष 2014-15) ''स्वर्ण जयन्ती महोत्सव'' के रूप में मनाया जा रहा है। **इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद** ने इस स्वर्ण जयन्ती वर्ष में विभिन्न प्रकार के जन जागरण कार्यक्रम आयोजित किये हैं।

इन सभी कार्यक्रमों में जनता जनार्दन ने पूरी इच्छा शक्ति के साथ भाग लिया और अपना अमूल्य सहयोग देकर कार्यक्रमों को सफलता प्रदान की।

आप को ज्ञात ही है कि आजकल आषाढ़ मास (पुरूषोत्तम मास) चल रहा है। इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद ने जुलाई 2015 में (7.7.15 से 30.7.2015 तक) ''शुद्ध पर्यावरण'' के लिए वृक्षारोपण का कार्यक्रम करना तय किया गया।

- स्वच्छ दिल्ली, स्वस्थ दिल्ली, प्रदूषण मुक्त दिल्ली, हरित दिल्ली।
- 12 जुलाई (रविवार) वृक्षारोपण का विशेष अभियान।

पर्यावरण संरक्षण, विकृत प्रदूषण को समाप्त करने तथा दैवीय आपदा से बचने हेतु देशी पौधों का रोपण करना आवश्यक है। यह कार्य समाज के सभी बन्धुओं को मिलकर करना होगा, तभी हम वन, जल तथा जमीन का संरक्षण और संवर्धन कर सकेंगे।

१. तुलसी

विश्व हिन्दू परिषद की सोच है कि, घरों में तुलसी का पौधा अवश्य होना चाहिए। तुलसी अनेक बीमारियों की औषधि है। जिस घर में तुलसी विराजमान रहती है वहाँ तरहतरह के बरकते होती हैं। साक्षात् नारायण वहाँ विराजमान रहते हैं। अनेकों लोग तुलसी की पूजा करते हैं और बड़ी धूम-धाम से तुलसी जी के विवाह का आयोजन भी करते हैं। अतः तुलसी एक दिव्य औषधीय पौधा है।

२. पीपल

कार्बन डाइ-ऑक्साइड को ऑक्सीजन में 24 घण्टे बदलने वाला। इसका फल पक्षियेां को प्रिय। धार्मिक और वैज्ञानिक महत्त्व तथा तेजी से बढ़ने वाला पेड़।

३. आम

समस्त देश में इसकी लकड़ी सबसे मद्धिम गति से अधिक समय तक जलती है। पूजा के कार्यों में प्रयोग। फलों का राजा।

४. बरगद

40 प्रकार के पक्षी, पशुओं को फल प्रदान करने वाला, धार्मिक महत्त्व औषधीय गुण से युक्त। सड़कों के किनारे घनी छाया प्रदान करने वाला।

५. इमली

घनी छाया देने वाला, सड़कों के किनारे लगाने के लिए, फल का व्यापारिक महत्त्व, पक्षियों को प्रिय।

६. नीम

खारे पानी वाले इलाकों में भी घना रूप धारण करने वाला, सड़कों के किनारे, बंजर और खारे जगहों पर रोपण के लिए उपयुक्त। औषधीय गुण-तेल, बहज, पत्ते।

७. जामुन

अपने पत्तों की घनी छाया, फलों के औषधीय गुण तथा बीजों का भी व्यावसायिक उपयोग। पूरे उत्त्र भारत के सड़कों, जंगलों, बंजर जमीन के लिए उपयुक्त। पक्षियों, पशुओं और मनुष्यों को भाने वाला फल।

अतः ऐसे अनेक देशी फलदार, औषधीय गुणों से युक्त वृक्षों का महत्त्व समझकर इनका अधिक से अधिक रोपण किया जाये यह विष्व हिन्दू परिषद का आग्रह है ताकि पर्यावरण को शुद्ध, स्वस्थ और प्रदूषण मुक्त बनाया जा सके।

जुलाई माह में प्रखण्ड स्तर पर सभी क्षेत्रों में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा वृक्षारोपण और पौधा वितरण के कई कार्यक्रम आयोजित किये। आप सभी भगिनी/बन्धओं ने इस वृक्षारोपण के कार्यक्रम में अपना मूल्यवान सहयोग अवश्य प्रदान किया और पूरी शक्ति लगाकर पर्यावरण को स्वच्छ कर जनता जनार्दन के स्वास्थ्य को ठीक रखने में यश ओर पुण्य के भागी बने।

विश्व हिन्दू परिषद आपके सहयोग से सदैव ही देश, धर्म और समाज के कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार के

शेष पृष्ठ 25 पर.....

बैंकॉक के ब्रह्मा के मन्दिर पर आतंकी हमला, 27 मरे

थाईलैंड की राजधानी में इरावन मन्दिर में मिले तीन जिंदा बम मरने वालों में चार विदेशी सैलानी, 117 घायल

बैंकॉक: आतंकी हमलों में अब तक बची रही थाइलैंड की राजधानी बैंकॉक सोमवार की शाम जोरदार बम धमाके से दहल उठा। हिन्दुओं के आराध्य ब्रह्मा के प्रसिद्ध इरावन मन्दिर के अंदर हुए बम विस्फोट में चार विदेशी सैलानियों समेत 27 लोगों की मौत हो गई और करीब 117 अन्य घायल हो गए। थाइलैंड की पुलिस को मन्दिर के अंदर से तीन जिंदा बम मिले जिसे समय रहते निष्क्रिय किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस आतंकी हमले की कड़ी आलोचना की है।

इरावन मन्दिर के परिसर में हुए बम विस्फोट को थाइलैंड की पुलिस ने आतंकी हमला बताया है। बम धमाका शाम सात बजे भारतीय समय के अनुसार शाम 5.30 बजे) हुआ। सूत्रों के अनुसार तीन बम मन्दिर के अंदर भी रखे गए थे, जिन्हें समय रहते निष्क्रिय कर दिया गया। जिस बम से धमाका हुआ वह मन्दिर परिसर के अंदर ही बांउड्री के पास एक बेंच के नीचे रखा था। विस्फोट से मन्दिर की बाउंड्री की लोहे की रेलिंग मुड़ कर बाहर की ओर झुक गई है। मन्दिर परिसर में कुछ लाशों के टुकड़े बिखरे देखे गए। पहले पुलिस का कहना था कि बम मन्दिर के बाहर एक मोटरसाइकिल पर रखा था।

मोदी ने हमले की निंदा की

इधर, यूएई के दौरे पर गए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट करके बैंकॉक के ब्रह्मा मन्दिर में हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि उनकी सहानुभूति हमले में मारे गए लोगों के परिजनों के साथ है। वह घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करते हैं। मारे गए चार विदेशी पर्यटकों में से दो की पहचान चीनी और फिलीपींस के नागरिक के तौर पर हुई है। अभी तक हमले की जिम्मेदारी किसी ने नहीं ली है। लेकिन दक्षिण के मुस्लिम अलगाववादियों पर जाँच एजेंसियों का शक है। मन्दिर के पास ही एक शॉपिंग मॉल में शूटिंग कर रही फिल्म अभिनेत्री जिनीलिया ने बताया कि धमाके के बाद हर तरफ अफरा-तफरी का माहौल था।

5 किलो का था टीएनटी बम

थाईलैंड के रक्षा मंत्री प्रावित वोंगसुवोंग ने कहा, 'यह एक टीएनटी बम है। जिन लोगों ने इस वारदात को अंजाम दिया उनका मकसद विदेशियों और थाईलैंड के पर्यटन व अर्थव्यवस्था को निशाना बनाना था।' थाई पुलिस ने बताया कि टीएनटी विस्फोटक से बना बम पाँच किलो का था। विस्फोट होते ही आग लगने से मन्दिर परिसर के पास खड़ी कई कारों और मोटरसाइकिल समेत चालीस वाहन जलकर खाक हो गए। विस्फोट स्थल पर एक विशाल गड्ढा बन गया है। विस्फोट चालीस मीटर के दायरे में हुआ। आसपास हर तरफ क्षत-विक्षत लाशें बिखरी पड़ी थीं।

मन्दिर में बड़ी संख्या में आते हैं श्रद्धालु

ब्रह्मा जी का इरावन मन्दिर बैंकॉक के मुख्य वाणिज्यिक इलाके में स्थित है। यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक हर रोज आते हैं। यह जगह तीन तरफ से बड़े शॉपिंग मॉल से घिरी है और इसके एक तरफ मुख्य सड़क है। बैंकॉक में भारतीय राजदूत हर्ष सृंगला ने बताया कि किसी भारतीय के हताहत होने की कोई खबर नहीं है। बम विस्फोट के बाद थाई पुलिस की आपात वैन, बम स्क्वाड दस्ता और एंबुलेंस तत्काल घटनास्थल पर पहुँचे और पुलिस ने जाँच शुरू कर दी। ❑

हिन्दुस्थान अखण्ड होकर ही रहेगा

-श्री इन्द्रेश कुमार

नई दिल्ली 15 अगस्त 2015। राष्ट्रीय सिख संगत दिल्ली एन.सी.आर. एवं दिल्ली प्रदेश के अखण्ड भारत अरदास एवं स्वतंत्रता दिवस समागम में मुख मेहमान श्री इन्द्रेश कुमार जी-सदस्य कार्यकारी मण्डल-राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संगत भवन के प्रांगण में स. चिरंजीव सिंह, स. गुरचरन सिंह गिल, श्री अविनाश जायसवाल, डॉ. अवतार सिंह शास्त्री, स. देवेन्दर सिंह गुजराल, स. जसपाल सिंह मनचंदा, स. किरणपाल सिंह त्यागी, श्री शीशपाल सिंह, सजगदीश सिंह, श्री रूपेश जी, स. नरविन्दर सिंह, श्री राजेश गुप्ता, श्री अनिल छाबड़ा, श्री पुनीत वोहरा, स. जसविन्दर सिंह बंटी, स. अवतार सिंह राणा, वशिष्ट मेहमान श्री वीरेन्द्र बिष्ट-प्रतिनिधि सत्कारयोग श्री सुमेश महरोत्रा, प्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति तथा समूह संगतों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

श्री इन्द्रेश कुमार जी ने संगतों को आह्वान करते हुए कहा कि हिन्दुस्थान का बटवारा उस समय के हिन्दुस्थान के नेतृत्व का एक काला और कलंकित अध्याय है। आज हमारे पवित्र स्थान श्री ननकाणा साहिब, श्री पंजा साहिब, ऋषि पाणिनि, संत झूलेलाल का सिंध प्रदेश, गांधारी का कंधार, शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र तक्षशिला विश्वविद्यालय, भक्त प्रह्लाद का मुलतान, नानकशाही गुरुद्वारा-ढाका, महाराज पोरस का सीमान्त राज्य तथा सम्पूर्ण गौरवशाली क्षेत्र हिन्दुस्थान से काट दिया गया। आज हम अपनी अरदास में उनकी सेवा संभाल का अधिकार पुनः वापिस लेने के लिए प्रयत्नरत हैं। आवश्यकता है कि हम आने वाले समय में इस अप्राकृतिक बटवारे को हिन्दुस्थान के व्यक्ति-व्यक्ति को जगागर संगठित कर समाप्त करें और फिर से अपना हिन्दुस्थान अखण्ड होकर पूरे विश्व का नेतृत्व करे।

मुख्य वक्ता स. गुरचरन सिंह गिल ने अपनी अरदास में किए गए संकल्प को अपने जीवन में ही साकार करने का प्रण लेने का आह्वान किया। स. गिल ने संगतों से विचार सांझे करते हुए कहा कि संगठित,अनुशासित और देशभक्त समाज ही अपने संकल्पों को पूरा कर पाता है।

विशेष मेहमान सत्कारयोग श्री महेश चड्ढा-समन्वयक (Co-ordinator) केन्द्रीय मंत्री-भारत सरकार ने संगतों को बताया कि देश के बटवारे का मूल्य 10 लाख हिन्दुस्थानियों के कत्लेआम से चुकाना पड़ा। जब तक भारत अखण्ड नहीं होगा तब तक अपने देश में, आस-पास के क्षेत्र में तथा विश्व में शांति की स्थापना नहीं हो पाएगी। हिन्दुस्थान ही प्राणी मात्र की रक्षा करने का व्रत अपने खून में लेकर प्रकट हुआ है।

विशेष रूप से उपस्थित श्री वीरेन्द्र बिष्ट-प्रतिनिधि सत्कारयोग श्री सुमेश महरोत्रा, प्रमुख समाजसेवी एवं उद्योगपति ने राष्ट्रीय सिख संगत और उपस्थित संगतों का आभार जताते हुए कहा कि अखण्ड भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए श्री गुरुग्रंथ साहिब में सामाजिक समरसता के सन्देश को 100 प्रतिशत देशवासियों तक पहुंचाने के पवित्र काम में हम सबको लगना होगा।

पूर्व अध्यक्ष अल्पसंख्यक आयोग भारत सरकार स. त्रिलोचन सिंह ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि राष्ट्रीय सिख संगत का अखण्ड भारत की अरदास का सन्देश हिन्दुस्थानियों में अमृत का संचार करेगा। गुरु परम्परा ने खालसा सिरजना कर महाराजा रणजीत सिंह के खालसा राज तक जो इतिहास रचा, वह हिन्दुस्थान का स्वर्णिम इतिहास है। राष्ट्रीय महामंत्री संगठन श्री अविनाश जायसवाल ने संगतों का आह्वान करते हुए कहा कि अगर 2500 वर्षों के सतत प्रयास के बाद इजराइल देश की स्थापना की जा सकती है तो हिन्दुस्थान भी हम सबके प्रयत्नों से अखण्ड होकर रहेगा।

शेष पृष्ठ 25 पर.....

वि.हि.प., बजरंग दल ने किया सीमावर्ती क्षेत्रों का दौरा

जम्मू 11अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद का प्रतिनिधिमण्डल श्री सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल की अध्यक्षता में परगवाल सैक्टर के सीमावर्ती गांव हमीरपुर कोना में पकिस्तान की तरफ से हुई गोलाबारी के निरिक्षण हेतु गया। गत 4 अगस्त को पाकिस्तान द्वारा जम्मू शहर के सीमावर्ती क्षेत्रों अबदुल्लियां, व आर.एस.पुरा के सीमावर्ती गांव में संघर्षविराम का उलंघन कर भारी गोला बारूद दागे। इस क्रम को जारी रखते हुए परगवाल सैक्टर के हमीरपुर कोना गांव के एक युवक संजय कुमार की मृत्यु हुई एवं कई मकान क्षतिग्रस्त हुए। विहिप के प्रतिनिधिमण्डल संजय कुमार के शोकग्रस्त परिजनों से मिला एवं अन्य सीमा से सटे गांवों का भी निरिक्षण किया। प्रशासन की तरफ से पीड़ित परिवारों को किसी भी प्रकार के सहायता नहीं दी गई है।

विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्त संरक्षक डा. रमाकान्त दूबे, सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल अध्यक्ष बाबा यात्री न्यास, सुदर्शन खजूरिया, अशोक गुप्ता, राजकुमार बनाथिया, एवं बजरंगदल के कार्यकर्ताओं का शिष्टमंडल डिवकाम से मिला एवं परगवाल सैक्टर में हुई क्षति के बारे में उन्हें अवगत करवाया। मंडलायुक्त डा. पवन कोतवाल ने आश्वासन दिया कि पीड़ित परिवारों को हर संभव सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी जिसमें ऐम्बुलेन्स, परगावल अस्पताल में ब्लड बैंक आदि की व्यवस्था की जाऐगी।

प्रेषक : **राजेश भसीन**

श्रीअमरनाथ यात्रियों की सुरक्षा कड़ी की जाए

जम्मू 11 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्त संरक्षक डा. रमाकान्त दूबे एवं बाबा अमरनाथ एवं बूढ़ा अमरनाथ यात्री न्यास के अध्यक्ष सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल ने संयुक्त पत्रकारवार्ता में जम्मू महानगर से मात्र 90 कि.मी. दूर समरौली स्थित नरसू नाला के पास पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा बी.एस.एफ के काफिले को निशाना बनाया गया जिसमे बी.एस.एफ का एक जवान शहीद एवं 9 लोग बुरी तरह जख्मी हुए इसकी कड़ी अलोचना की। पांच घंटे चली इस मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया एवं नावेद खान निवासी फैसलाबाद को स्थानीय लोगों ने पकड़कर सुरक्षाबल को सौंपा। नावेद खान ने मिडिया को बताया कि वो पाकिस्तान से है और श्रीअमरनाथ यात्रा को बाधित करने के लिए यह षडयंत्र रचा था। उसने यह भी कहा कि उसे "खून बहाने में मजा आता है" और वह हिन्दुओं की अमरनाथ यात्रा को बाधित करने के लिए इस घटना को अंजाम दिया। विहिप एवं बाबा अमरनाथ यात्री न्यास ने प्रशासन से मांग की कि श्रीअमरनाथ यात्रा के श्रद्धालुओं एवं लंगर संचालकों सुरक्षा पुख्ता की जाए। ❑

.....पृष्ठ 22 का शेष

कार्यक्रम करती रहती है तथा आगे भी करती रहेगी। आइये हम सब मिलकर देश की राजधानी दिल्ली को हरित प्रदेश बनायें।

निवेदक :-

डॉ. राकेश चन्द्र रूस्तगी	**डॉ. कृष्ण कुमार**	**गुरदीन प्रसाद रूस्तगी**
अध्यक्ष	संयोजक	मंत्री
9811333198	9818740144	9911330830

.....पृष्ठ 24 का शेष

कार्यक्रम अध्यक्ष सत्कारयोग श्री मनोज शौकीन-पूर्व विधायक एवं शिक्षाविद ने युवाओं को स्मरण कराते हुए कहा कि आज का युवा भारत अपने सब संकल्पों को आने वाले समय में सम्पन्न करेगा। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष स. देवेन्दर सिंह गुजराल, दिल्ली एन.सी.आर. अध्यक्ष स. जसपाल सिंह मनचंदा ने संगतों का आभार जताते हुए कहा कि अपनी अरदास में हम नित्य प्रति अपने गुरुधामों की सेवा संभाल के लिए वाहिगुरुजी से शक्ति प्राप्त करने में बेनती करते हैं।

-डॉ. अवतार सिंह शास्त्री
राष्ट्रीय महामंत्री संगठन

बूढ़ा अमरनाथ यात्रा २०१५ का शुभारंभ

जम्मू 19 अगस्त, बाबा अमरनाथ एवं बूढ़ा अमरनाथ यात्री न्यास द्वारा वार्षिक बूढ़ा अमरनाथ यात्रा का उद्घाटन कार्यक्रम आधार शिविर भगवती नगर में हवन, यज्ञ एवं द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर महंत रामेश्वर दास जी, महामण्डलेश्वर रामस्वरूप दास जी, मंडलायुक्त डा. पवन कोतवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। पर्यटन विभाग संचालक आर.के. वर्मा, बाबा यात्री न्यास के अध्यक्ष सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल, बजरंगदल के राष्ट्रीय संयोजक राजेश पाण्डे, ब.द.अ.भ.प्र. मनोज वर्मा, विहिप प्रान्त संरक्षक डा. रमाकान्त दूबे, हेमराज खजूरिया, शक्ति दत्त शर्मा, सुदर्शन खजूरिया, कर्ण सिंह चाड़क, डा. आदर्श परिहार, रेवती रमण, सी.आर.पी.एफ के कमांडेंट एवं गणमाण्य सभा-सोसाईटियों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। बजरंगदल के राष्ट्रीय संयोजक राजेश पाण्डे ने कहा कि आतंकवाद के कारण पुंछ व आस-पास के क्षेत्र से हिन्दू पलायन कर चुके थे। बजरंगदल ने अखिल भारतीय स्तर पर 2005 में बूढ़ा अमरनाथ यात्रा आरंभ की थी जिसके कारण पलायन कर चुका हिन्दू पुनः अपने स्थानों पर लौट आया। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में चार शंकराचार्यों के मठ, चार धाम एवं चार पवित्र स्थानों पर महाकुंभ का आयोजन होता है। यात्राएं ही भारत की अखंडता और अनेकता में एकता को दर्शातीं हैं। बजरंगदल द्वारा देशभर के प्रान्तों में आतंकवादियों, मुस्लिम समुदाय द्वारा बंद हो चुकी पवित्र यात्राओं को पुनः प्रारंभ करने को बजरंगदल ने चुनौती के रूप में स्वीकारा है। इस अवसर पर सुरेन्द्र अग्रवाल ने कहा कि न्यास द्वारा अमरनाथ एवं बूढ़ा अमरनाथ यात्राओं में पूरी तरह सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती हैं। मडलायुक्त डा. पवन कोतवाल ने कहा कि कश्मीर में शिवनिज्म एवं जम्मू में वैष्णविज्म होंने के कारण स्थान-स्थान पर ऐतिहासिक एवं पौराणिक देवस्थान हैं और भारत से आने वाले यात्रियों एवं श्रद्धालुओं की सुरक्षा का दयित्व राज्य की सुरक्षा बल एवं पुलिस द्वारा निभाया जाता है। अमरनाथ यात्रा, बूढ़ा अमरनाथ यात्रा, मचेल माता यात्रा, वैष्णों देवी यात्रा एवं अन्य यात्रओं पर आने वाले श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए स्थानीय लोग तैयार रहते हैं। डा. रमाकान्त दूबे द्वारा झण्डा दिखाकर बूढ़ा अमरनाथ यात्रा के पहले जत्थे ने पुंछ की तरफ रवान किया गया। 16 बसों में 500 यात्री बम-बम भोले के जयघोष लगाते हुए रवाना हुए।

इस अवसर पर बजरंदगल के प्रान्त संयोजक नवीन सूधन, सह संयोजक राकेश शर्मा, बालकृष्ण गुप्ता, व अन्य बजरंगी उपस्थित थे।

प्रेषक : **राजेश भसीन, जम्मू कश्मीर**

खिचड़ीपुर काँवड़ शिविर में काँवड़ियों के स्वागत में कार्यक्रम

हरिद्वार एवं नीलकंठ से दिल्ली पहुँच रहे काँवड़ियों के विश्राम एवं स्वागत के लिए खिचड़ीपुर काँवड़ सेवा समिती एवं इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा बनाये गये शिविर मे अखण्ड भारत मोर्चा के अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा द्वारा बजरंग दल के काँवड़ियों के दल का अभिन्दन किया गया। उपस्थित काँवड़ियों ने बताया कि उत्तर प्रदेश मे कई जगहों पर काँवड़ियों पर संप्रदाय विशेष द्वारा हमले किऐ गये उत्तर प्रदेश पुलिस ने भी काँवड़ियों को ही फटकार लगाई भक्ति पूर्ण संगीत बलपूर्वक बन्द करवाये गये। काँवड़ियों ने दिल्ली के शिविर मे आकर राहत की सांस ली है। श्री आहूजा ने बताया कि कुछ मुस्लिम युवकों को धारदार हथियार के साथ शिविर के नजदीक दिल्ली पुलिस ने पकड़ा है इस प्रकार घटनाऐं सांप्रदायिक सौर्हाद के लिए खतरा है। उन्होने काँवड़ियों पर प्रशासन द्वारा की गई सख्ताई पर कहा चूंकि प्रदेश मे चुनाव नजदीक है उत्तर प्रदेश मे काँवडियों पर प्रशासन द्वारा डीजे पर रोक वर्ग विशेष को लुभाने की मुलायम की चाल है।

शिविर मे इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद् के विभाग मठ-मन्दिर प्रमुख श्री देवेन्द्र चौहान, सेवा समिती के श्री सूरज वर्मा, श्री खजांची राम सिख संगत के स.नरविन्द्र सिंह बजरंग दल के श्री शिवा ठाकुर, श्री मेहश पंडित आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

प्रेषक : **राजश्री आहूजा** (प्रचारमंत्री)